ठठोली

[विनोदपूर्ण कथानकों का सर्वश्रेष्ठ सङ्कलन]

सङ्कलनकर्ता

ब्रजमोहन तिवारी

प्रकाशक

हिन्दुस्तानी बुकडिपो

लखनऊ

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी बुकडिपो
लखनऊ

मुद्रक
पं० विष्णुनारायण भार्गव
अध्यक्ष हिन्दुस्तानी आर्ट-काटेज
लखनऊ

वक्तव्य

जीवन की सार्थकता हँसने में है, रोने में नहीं।

भगवान की इस सृष्टि में मानव का एक विशेष स्थान है। वह यह कि समस्त सृष्टि मानव के लिये है। यदि मानव न होता तो इस सृष्टि की कोई उपादेयता ही न थी। कम-से-कम जहाँ तक मानव और शेष सृष्टि का परस्पर सम्बन्ध है, जहाँ मानव नहीं वहाँ सृष्टि की व्यर्थता स्वयं सिद्ध है।

सारी सृष्टि मानव की लाला-भूमि है। एक दार्शनिक की दृष्टि से देखा जाय तो मानव प्रकृति के साथ खिलवाड़ करता हुआ दिखाई देता है। मानव का गम्भीर से गम्भीर कार्य प्रकृति के विशाल प्राङ्गण में उपहासास्पद ही मालूम पड़ता है। जिस प्रकार बच्चे घरौंदों को बनाया-बिगाड़ा करते हैं, उसी प्रकार सृष्टि के आदि से लेकर आज के दिन तक मानव ने बड़ी-बड़ी सभ्यताओं की सृष्टि कर डाली, बड़े-बड़े आविष्कार किये। सागर, पृथ्वी और आकाश सबको एक सिरे से दूसरे तक नाप डाला। बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित कर डाले और,अन्ततोगत्वा उसने विध्वंस-लीला भी रच डाली। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव ने अपने महान से महान काम मे भी अपने को भुला नहीं दिया। उसने सम्राट बनकर अपने परम शक्ति-शाली होने का दावा नहीं किया। शक्ति का आभास उसे हुआ, पर उसने छाया को असलियत नहीं मान लिया। और जब तक वह छाया को असलियत मानकर उसके पीछे दौड़ लगाता रहा, दुनियाँ उस पर हँसती ही रही। जब तक वह अपने दुस्साहस की असफलता पर

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी बुकडिपो
लखनऊ

मुद्रक
पं० विष्णुनारायण भार्गव
अध्यक्ष हिन्दुस्तानी आर्ट-काटेज
लखनऊ

वक्तव्य

जीवन की सार्थकता हँसने में है, रोने में नहीं।

भगवान की इस सृष्टि में मानव का एक विशेष स्थान है। वह यह कि समस्त सृष्टि मानव के लिये है। यदि मानव न होता तो इस सृष्टि की कोई उपादेयता ही न थी। कम-से-कम जहाँ तक मानव और शेष सृष्टि का परस्पर सम्बन्ध है, जहाँ मानव नहीं वहाँ सृष्टि की व्यर्थता स्वयं सिद्ध है।

सारी सृष्टि मानव की लीला-भूमि है। एक दार्शनिक की दृष्टि से देखा जाय तो मानव प्रकृति के साथ खिलवाड़ करता हुआ दिखाई देता है। मानव का गम्भीर से गम्भीर कार्य प्रकृति के विशाल प्राङ्गण में उपहासास्पद ही मालूम पड़ता है। जिस प्रकार बच्चे घरौंदों को बनाया-बिगाड़ा करते हैं, उसी प्रकार सृष्टि के आदि से लेकर आज के दिन तक मानव ने बड़ी-बड़ी सभ्यताओं की सृष्टि कर डाली, बड़े-बड़े आविष्कार किये। सागर, पृथ्वी और आकाश सबको एक सिरे से दूसरे तक नाप डाला। बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित कर डाले और अन्ततोगत्वा उसने विध्वंस-लीला भी रच डाली। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव ने अपने महान से महान काम में भी अपने को भुला नहीं दिया। उसने सम्राट बनकर अपने परम शक्ति-शाली होने का दावा नहीं किया। शक्ति का आभास उसे हुआ, पर उसने छाया को असलियत नहीं मान लिया। और जब तक वह छाया को असलियत मानकर उसके पीछे दौड़ लगाता रहा, दुनियाँ उस पर हँसती ही रही। जब तक वह अपने दुस्साहस की असफलता पर

खिसियाता रहा, दर्शक उस पर हँसने से बाज न आये। फिर अपने को भिखारी के वेष में देखकर भी मानव ने अपने को एक दिन सम्राट के रूप में देखने का स्वप्न भी नहीं भुलाया। अनेक व्यक्तियों ने मानव जीवन के इस गम्भीर पक्ष को सदैव मूर्खता का पर्याय समझा है और उसकी खिल्ली उड़ाने में ही बुद्धिमानी।

जिसमें समझ नहीं होती वह अपने को समझदार बनाने की कोशिश में दिन-रात एक करता हुआ देखा गया है। और जब अन्य लोग उसे इस प्रकार व्यस्त तथा व्यग्र देखते हैं तो उन्हें हँसी आये बिना नहीं रहती। क्योंकि वे जानते हैं कि दिन-रात के परिश्रम से, चिन्ता करने से, व्यग्र रहने से, व्यक्ति पागल भले ही हो जावे पर समझ का तो एक जर्रा भी उसे नहीं मिल सकेगा।

यह समझ है क्या पदार्थ ? समझ की कोई परिभाषा नहीं, क्योंकि वह अपरिमेय है। वह व्यक्तिगत अनुभव पर निर्भर है।

ऋषियों का कहना है कि संसार स्वप्नवत है। जो इस 'जीते-जागते' स्वप्न को सच्चा साबित करने की धुन में लगे रहते हैं, वे उपहास के पात्र ही हो सकते हैं। जहाँ व्यक्ति खेलने, कूदने, हँसने बोलने, नाचने गाने के लिये पैदा हुआ है, वहाँ यदि वह ढेर सारे नियम और उपनियम बनाकर अपनी कर्तृत्व शक्ति को शृंखलाबद्ध कर दे और उनकी पाबंदी के जोश में क्रोध और महत्व प्रदर्शन करता हुआ अपने को योग्यतम सिद्ध करने का दावा करने लगे, तो वह पागल नहीं तो क्या है ?

समझदार व्यक्ति स्वप्न को स्वप्न समझता है। यही उसकी सबसे बड़ी समझदारी है, और जो स्वप्न को वास्तविकता का रूप देने का प्रयत्न करते हैं उन पर हँसी आये बिना नहीं रह सकती।

इतना ही कहकर मैं यह वक्तव्य समाप्त करता हूँ। सम्भव है कि 'ठठोली' के कुछ उदाहरण कुछ व्यक्तियों की समझ के बाहर हों।

उन्हें निराश न होना चाहिये। यदि वे दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करेंगे तो अवश्य सफल होंगे। यह संकलन लगभग सम्पूर्ण ही अभारतीय है। और ऐसा केवल इसलिये किया गया है कि हम भारतीय दूसरे देशवालों के हास्य को भी जानें, समझें और उनकी व्यक्तिगत एवं सामाजिक त्रुटियों, अभावों और दुर्बलताओं के प्रति अधिक सजग रहकर मानवता को अपनाने के योग्य बने।

कान्यकुब्ज कालेज़,
लखनऊ
१२ अगस्त १९४५

व्रजमोहन तिवारी

एक करोड़पति अपने मित्र से अपने नये स्नानागार (बाथरूम) की तारीफ कर रहा था। नहाने के लिये तुम्हें स्नानागार में जाने की जरूरत नहीं। बटन दबाते ही पानी से भरा हुआ टब इन छोटी पटरियों पर सीधा सोने के कमरे (बेडरूम) में ही चला आता है। देखो, मैं तुम्हें दिखाऊँ। इसमे ज़रा भी तो दिक़्कत नहीं होती। इतना कहकर उसने बटन दबाया। तुरन्त ही टब, पानी से लबालब, मय उनकी श्रीमतीजी के बेडरूम मे आ हाजिर हुआ!

❀ ❀ ❀

एक इटालियन सैनिक को कुछ आवश्यक पत्र एक स्थान पर लेकर दे आने को कहा गया था। अपने अफ़सर के पास आकर उसने समाचार दिया कि सड़क पर एक अँगरेज सिपाही ने उसे रोक लिया, उसकी तलाशी ली, और सब कागजात छीनकर वह चलता बना।

अफसर उस पर बहुत लाल-पीला हुआ—"क्या कहा? और तुमने उसको तलाशी लेने दी? तुम्हारे पास रिवॉल्वर भी तो था न, क्यों?"

"जी हाँ था", सैनिक ने उत्तर दिया। "पर वह उसके हाथ नहीं लग सका। उसे मैंने अपने हैट के अन्दर छिपा लिया था।"

❀ ❀ ❀

जब पत्नी अपने पति को भोजन करा चुकी, बड़े प्यार से उसके पास आकर बोली—"मैं तुम्हारे पास एक खुशखबरी सुनाने आई हूँ। अब जल्दी ही हमारे छोटे से घर में एक और प्राणी आनेवाला है।"

पति का मुख आनन्द से झलक उठा।

"सच, क्या ?·....."

"हाँ, हाँ। मेरी मा हमारे साथ रहने को आ रही है।"

❀ ❀ ❀

महिला बहुत चालाक थी। वकील ने सोचा कि शायद उसे उत्तेजित करने से कुछ सिलसिला सूझ जाय।

वह बोला—"अच्छा, मैं अब आपके ही सम्बन्ध में कुछ पूछना चाहता हूँ। आपकी उम्र क्या है ?"

उसने उत्तर दिया—"सुनो, अभी एक घंटा भी नहीं हुआ है कि जज साहब ने सुनी सुनाई बात का विश्वास करने से एतराज़ किया था। और फिर मैं कब पैदा हुई थी यह मुझे याद नहीं।"

❀ ❀ ❀

"अच्छा मोहन, जिस देश में दूध और शहद की बहुतायत हो वह कैसा देश होगा ?"

"चिपकना।"

❀ ❀ ❀

मेजर ने सैनिक से जिसने सैल्यूट नहीं किया था पूछा—"क्या कम्पनी में सैल्यूट करना नहीं सिखाया जाता ?"

"सिखाया तो जरूर जाता है।"

"तब फिर तुमने मुझे सैल्यूट क्यों नहीं किया ?"

इसलिये कि आपकी मुझपर जरूरत से ज्यादा नजर न पड़े, क्योंकि बिना पास के मुझे बाहर निकलने का हुक्म नहीं है।"

❀ ❀ ❀

चुप्पा पड़ोसी

यह पुरुषोत्तम बड़ा ही विचित्र है। मैं उसे बहुत दिनों से जानता हूँ। वह अभी कुँआरा ही है और हमारे ही घर मे रहता है। मैंने कभी उसे बातचीत करते नहीं सुना, और न सभा-सोसाइटी में ही कहीं देखा है; उसे गाने-बजाने का भी शौक नहीं। और वह बहुत ही विनम्र और सुशील है।

सुनिये, मै आपको एक घटना सुनाऊँ जिससे मै बहुत घबरा गया हूँ। असल में बात यह है कि मैं उसके बाद से ऐसा डर गया हूँ कि अब मैंने निश्चय कर लिया है कि कभी किसी को तैरना सिखाने का स्वप्न मे भी ध्यान नहीं करूँगा। मामला यह है कि मेरा दिल कमजोर है और मै किसी को डूबते हुए नहीं देख सकता।

बात ऐसे हुई। अबकी साल छुट्टियों मे मै समुद्र तट पर चला गया। पहले ही दिन मेरी वहाँ पुरुषोत्तम से भेंट हो गई। वह पाजी धूप मे चट्टान पर लेटा हुआ था।

मैंने उससे यों ही पूछा—"तुम समुद्र मे नहाते क्यों नहीं ?"

"न, न, न, नकुल", वह शर्माते हुए बोला—"मुझे बचपन से ही पानी से भय लगता है। मैं तो नदी मे भी नहीं नहाता, समुद्र का तो जिक्र ही व्यर्थ है। कहीं भी तो समुद्र का अन्त नहीं दिखाई देता। जहाँ देखो वहाँ पानी ही पानी !"

पुरुषोत्तम अजीब आदमी है। उसकी बात सुनकर मुझे हँसी आ गई। मैंने मन मे कहा, यह कैसा नौजवान है, जो पानी से भी डरता है। और ऐसे युग मे जब लडकियाँ तक भी तैरना, खेलना, कूदना

जानती हैं। मैंने उससे कहा—"यह बहुत खराब बात है। लड़कियाँ तुम्हारी हँसी उड़ाएँगी अगर वे सुन पाएँ कि तुम्हें पानी से डर लगता है। ऐसे काम नहीं चलेगा। तुम्हें तैरना सीखना पड़ेगा।"

वह और शर्माकर बोला—"क्या करूँ प्रकृति से मजबूर हूँ।"

मैंने दृढ़ता से कहा—"प्रकृति-विकृति कुछ नहीं। तुम्हें तैरना सीखना पड़ेगा। और मैं तुम्हें सिखाऊँगा।"

मैंने देखा, मेरी बातों से पुरुषोत्तम भय खाकर काँप रहा था। वह बोला—"आप क्या कह रहे हैं? मैं कैसे सीख सकता हूँ? कहाँ तैरना, कहाँ मेरी उम्र!"

मैंने उत्तर दिया—"उम्र से क्या होता है? उम्र बिल्कुल ठीक है। सिखाने की जिम्मेदारी मेरी रही। कल सवेरे से हाज़िरी देनी पड़ेगी, यही।" वह कुछ बोला नहीं। बोलता भी क्या? मैंने उसको बिल्कुल निरुत्तर कर दिया था।

दूसरे दिन से मैंने, साहब, पुरुषोत्तम को सिखाना शुरू कर दिया। वह पानी में क्या जा रहा था, मानो फाँसी के तख्ते पर लटकने जा रहा हो। हम, क्षमा कीजियेगा, कपड़े उतारकर पानी में घुस रहे थे।

"चलो, चलो। घुसो", मैंने दृढ़ता के साथ अधिकारपूर्ण स्वर में उसे आज्ञा दी।

उसने आँखें मूँद लीं और पानी में घुसा। अब उसने तमाशा दिखाना शुरू किया। ज्योंही उसके घुटनों तक पानी पहुँचा, वह अधमरे की तरह बाहर भागा। मैंने पकड़कर उसे फिर घसीट लिया, किन्तु वह फिर बाहर भाग गया। उसे पानी से बहुत भय लग रहा था! एक घंटे तक ऐसे ही वह मुझे नचाता रहा। मैं पसीने में तर-बतर हो गया और कम-से-कम मेरा ढाई सेर वजन भी कम हो गया।

इसके बाद पुरुषोत्तम किनारे पर जा लेटा और लगा मेरी चिरौरी

करने—"नकुल भाई, मुझे बख्श दो। मुझे कभी तैरना नहीं आयगा। मेरी पानी से जानी दुश्मनी है।"

मगर मैं भला कब उसका पिण्ड छोड़नेवाला था।

"कल फिर हम लोग तैरेंगे। मैं तुम्हारी एक नहीं सुनूँगा। मैंने आख़िरी फ़ैसला सुना दिया है। इसकी अपील नहीं सुनी जा सकती।"

दूसरे दिन पुरुषोत्तम ने फिर वही पहले दिन का-सा तमाशा दिखाया। वह मेरी ओर ऐसे देखता जैसे मैं उसे फाँसी पर लटकाने जा रहा होऊँ।

"अब रहने भी दो।"

"न, हर्गिज़ नहीं। कूदो पानी में।"

मैं भी उसके पीछे-पीछे गया और उसे हाथ-पैर मारना सिखाया। एक घंटे भर में ही वह हाथ चलाना सीख गया, किन्तु उसकी टाँगों ने उसका साथ नहीं दिया। ज़मीन पर से उसके पैर ऊपर उठते ही नहीं थे। ख़ैर, एक एक करके उसने पाँव उठाना सीखा। एक साथ टाँगों को उठाना उसके लिये अभी मुमकिन नहीं था। मैं बिल्कुल थक गया और इस श्रम से ढाई सेर वजन मेरा और कम हो गया।

तीसरे रोज में ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थीं। मैं पुरुषोत्तम से बोला—"तुम्हारा भाग्यअच्छा है। आज तैरना बन्द।"

मैंने कहा न आपसे, यह पुरुषोत्तम सचमुच में अजीब है। उसने कपड़े उतारकर फेंक दिये और मुझसे बोला—"अब थोड़ा-थोड़ा करके मुझे पानी का अभ्यास होता जा रहा है, आपके आशीर्वाद से। और मैं कहीं हाथ पैर चलाना भूल न जाऊँ, इससे किनारे पर ही थोड़ा तैर लूँगा।"

इतना कहकर, मेरे रोकने पर भी, वह सीधे पानी में कूद पड़ा। मैंने चिल्लाकर कहा—"ज़रा सावधान रहना। कहीं बहे न चले जाओ।" मैंने देखा कि तूफ़ान ज़ोर का है। पुरुषोत्तम कहीं दिखाई ही नहीं पड़ रहा था। मैं ज़ोर-ज़ोर से लगा चिल्लाने—'पुरुषोत्तम! पुरुषोत्तम'।"

तट से दस गज की दूरी पर, मैंने किसी को लहरों से भिड़ते हुए देखा। कपड़े उतारकर मैं कूद पड़ा। लहरों में मैं डूब गया और लोगोंने मुझे किनारे पर ला पटका। मैं लगा चिल्ला-चिल्लाकर कहने—"बचाओ! दौड़ो! एक आदमी डूबा जा रहा है।"

लोग दौड़ते हुए आये। जो बहादुर थे वे पानी में कूद पड़े। कोस्ट-गार्ड भी दौड़े आये। मैं अधमरा-सा बड़ी देर तक चिल्लाता रहा।

तत्पश्चात् लगभग पचास गज़ की दूरी पर समुद्र में मैंने एक व्यक्ति को उस तूफानी समुद्र में तैरते हुए देखा! कैसा बढ़िया वह तैर रहा था! लहरों की उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी। एक नाविक दूर्बीन में से देखकर मुझसे बोला—"अरे, इसकी कोई चिन्ता न करो। यह तो मशहूर तैराक पुरुषोत्तम है। क्या तुमने कभी पुरुषोत्तम का नाम नहीं सुना?" सब मुझे देख देखकर हँस रहे थे। और मैं मूर्ख की तरह खड़ा सोच रहा था कि यह धरती फट जाय और मै उसमें समा जाऊँ।

कैसा पाजी है यह पुरुषोत्तम! मुझे इसने कैसा उल्लू बनाया, देखो!

बस उसी रोज़ से मैंने प्रतिज्ञा कर ली कि कभी किसी को तैरना नही सिखाऊँगा।

एक बार मसोलिनी ने सिनेमा में अपना एक चित्र देखा जिसमे वह एक अवसर पर व्याख्यान दे रहा था।

केवल एक व्यक्ति ने जो उसकी बगल में बैठा था ताली बजाई।

मसोलिनी ने उससे कहा—"मुझे खुशी है कि कम-से-कम एक व्यक्ति तो मिला जिसने मेरे व्याख्यान को पसन्द किया।"

"यह बात नही है। मेरे पास है एक पॉकेट रेडियो और यह देखो रहे कान मे लगाने के चोंगे (Ear-phones)। बैन्ड बाजा बज रहा है। मै उसी को सुन रहा हूँ। क्या खूब बज रहा है!"

❀ ❀ ❀

रात के समय डाक्टर साहब का टेलीफ़ोन सहसा बज उठा। डाक्टर साहब के एक पुराने रोगी ने बजाया था। रोगी बहुत परेशान था। वह चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था—"डाक्टर साहब, मेरी वाइफ की तबियत बहुत ख़राब है। उसके अपैन्डिक्स में तकलीफ है। आप कृपाकर जल्दी आइये।"

डाक्टर ने जँभाई लेते हुए कहा—"जाओ, सो जाओ। थोड़ा सोडा गर्म पानी के साथ पिला दो। कल देखने आऊँगा।"

इस पर पति महोदय और भी परेशान हुए। लगे चिल्ला-चिल्लाकर कहने—"वाक़ई में उसे अपैन्डिसाइटिस है। आप तुरन्त आइये।"

डाक्टर ने आश्वासन देते हुए कहा—"उसको अपैन्डिसाइटिस हर्गिज़ नहीं हो सकती। अभी तो उस वर्ष मैंने निकाली ही थी। भला किसी के दो दो अपैन्डिक्स भी हुआ करते हैं!"

पति ने कहा—"क्या कभी आपने यह नहीं सुना कि किसी के दो पत्नियाँ भी हो सकती हैं?"

❀ ❀ ❀

एक जगह एक सुन्दरी रूसी एक्ट्रैस का स्वागत किया गया। वहाँ उससे कुछ गाने की प्रार्थना की गई। जब उसे मौक़े की कोई चीज़ समझ में न आई, वह बोली कि मैं कुछ अपनी मातृ-भाषा में कहूँगी।

उपस्थित मण्डली की समझ में एक शब्द भी न आया। परन्तु वे उसके हाव-भाव और स्वर से वेहद प्रभावित हुए। तारीफ के पुल बाँध दिये गये। विदा होते समय एक महिला ने उससे पूछा—"अच्छा, यह बता दो तुमने क्या गाया था?" एक्ट्रैस ने जवाब दिया—"मैंने केवल एक से लेकर दो सौ तीस तक की गिनती सुनाई थी, रूसी भाषा में।"

❀ ❀ ❀

एक धनी सौदागर ने अपने नये महल का एक नक्शा बनवाने का निश्चय किया और एक कुशल चित्रकार को काम सुपुर्द कर दिया। यह तय हुआ कि सौदागर का चित्र महल के फाटक पर रहे।

जब नक्शा बनकर सौदागर के सामने आया, उसमें अपना चित्र न देख वह बोला—"अरे, मेरा चित्र तो इसमें है ही नहीं।"

चित्रकार ने मज़ाक में कहा—"आप चैक लिखने के लिये भीतर तशरीफ़ ले गये हैं, इसीलिये आप फाटक पर नहीं हैं।"

"यह बात है?" सौदागर ने उत्तर दिया। "तब तो कदाचित मैं निकलने ही वाला हूँगा। और यदि मै निकल आया तो तुरन्त ही चैक आपके हवाले करूँगा। तब तक हम इन्तजार करें। ठीक है न?"

❀ ❀ ❀

सिकन्दर महान का एक जनरल, ऐन्टीगोनस साइक्लॉप्स, एक बार अपने बीमार पुत्र को देखने गया। बीमार के कमरे से निकलकर जाते हुए उसने एक सुन्दरी युवती को देखा।

जब जनरल भीतर पहुँचा, उसे अपने पुत्र के सुन्दर स्वास्थ्य को देखकर आश्चर्य हुआ।

"बुखार से तो मेरा पिंड छूट गया है", नवयुवक ने पिता से कहा।

"हाँ", ऐन्टीगोनस ने उत्तर में कहा—"ज़ब मै तुम्हारे कमरे में घुस रहा था मैंने उसे बाहर जाते हुए देखा था।"

❀ ❀ ❀

"तुमको तो सिर्फ सात दिन की छुट्टी दी गई थी। दस दिन तुम ग़ैरहाज़िर कैसे रहे?" ऑफिसर ने पूछा।

"हुक्म हुआ था साफ सात दिन के लिये। पर तीन दिन तक घोर कुहरा रहा। क्या करता? मेरी इसमें क्या ग़ल्ती है?" रँगरूट ने उत्तर दिया।

❀ ❀ ❀

मेरा सैक्रेटरी

मेरा नाम है सत्यदेव। गालिबन आपने यह नाम सुना होगा। मै चित्रकार हूँ, और बहुधा अपने चित्रों को प्रदर्शनियों में भी भेजा करता हूँ।

मैं ईमानदार इज्जतदार आदमी हूँ। ऐसा मुझे मेरे मिलनेवाले भी समझते हैं। और बहुत समय तक मेरी भी अपने बारे में कुछ कुछ ऐसी ही राय थी। परन्तु कुछ समय से मुझे ऐसा लगता है कि ऐसा समझने का मुझे कोई हक नहीं है।

प्रसिद्ध चित्रकार सत्यदेव से अर्थात् अपने से मै अक्सर पूछा करता हूँ, "क्या तुम वाकई मे दुष्ट हो ?"

बात यह है कि हम मे कुछ ऐसे भी हैं जो अपने व्यवहार से मुझे सत्य और सुख के मार्ग पर जाने से रोकते हैं।

यह परिवर्तन मुझ में गत वर्ष से शुरू हुआ है। मेरी छोटी बिटिया अन्नपूर्णा बीमार पड़ गई थी। उसके सीधे कान मे घाव हो गया था। दर्जनों डाक्टरों ने उसका इलाज किया पर लाभ लेशमात्र भी न हो पाया।

मेरे मित्रों और मिलनेवालों ने मुझे सलाह दी कि एक विशेषज्ञ को कान दिखा दिया जाय। आदमी था हुशियार जहाँ तक कान के रोगों से सम्बन्ध था। यदि वह आपका सीधा कान देखता, तो फौरन बता देता था कि बायाँ कान कैसा है। अर्थात् यदि रोगी डाक्टर की फीस तुरन्त दे देता था, तो उसका रोग भी छू मन्तर होजाता था।

मैंने डाक्टर साहब को तुरन्त फोन किया। मुझे ऐसा लगा करता है कि बड़े आदमी आमतौर से फोन का जवाब अपने आप नहीं दिया करते। कोई महिला फोन पर आईं। हो सकता है कि डाक्टर साहब की श्रीमती जी ही हों। बड़े मृदुल स्वर मे यह जताते हुए कि मुझे

बात करने का कतई शऊर नहीं है वह बोलीं—"हाँ हाँ, कह तो दिया कि उन्हें जरा भी फुर्सत नही है। अभी वह नहीं आ सकेंगे।"

उसी समय मेरे मित्र ज्ञानप्रकाश जो भूगर्भ विद्या के विशारद हैं आगये। मैंने सब माजरा कह सुनाया। हम दोनों कुछ देर तक बैठे सोचते रहे कि अन्नपूर्णा के कान का दर्द किस प्रकार दूर किया जाय। सहसा ज्ञानप्रकाश अपनी कुर्सी पर से उछल पड़ा और बोला—"बताना तो सही क्या है फोन नम्बर। देखूं तो हज़रत कैसे नहीं आते हैं।"

"तो क्या तुम इस डाक्टर को जानते हो?" मैंने पूछा।

खैर, मैंने फोन नम्बर बता दिया यद्यपि सफलता की मुझे बहुत कम आशा थी। मैं कान लगाये बातचीत सुनता रहा—

"क्या डाक्टर साहब हैं? मैं चित्रकार सत्यदेव का प्राइवेट सैक्रेटरी हूँ। सत्यदेव जी की इच्छा है कि डाक्टर—इत्यादि इत्यादि—।"

थोड़ी देर के बाद ज्ञानप्रकाश ने टेलीफोन को रख दिया और बोला—"एक घंटे के अन्दर डाक्टर महोदय तशरीफ लाएँगे।"

"कैसे? क्यों?"

"अन्नपूर्णा को देखने?"

"लेकिन कैसे राजी हो गये?"

"यह मत पूछो। मामला बिल्कुल सीधा है। दुनियाँ में अभी ऐसे बहुत से व्यक्ति मौजूद हैं जो दिखावा बहुत पसन्द करते हैं। रायबहादुरों और रायसाहबों के सामने उनका सिर खुद ब खु झुकद जाता है। उन्हें कला, विज्ञान, चित्र, कविता आदि से कोई सरोकार नहीं। किसी में चाहे कितने ही गुण क्यों न हों, जब तक वह 'सर' या 'राय साहब' नहीं, वे उसकी हस्ती स्वीकार ही नहीं करेंगे। एक प्राइवेट सैक्रेटरी किसी भी राय साहब से कम नहीं। जिसके पास प्राइवेट सैक्रेटरी न हो वह मनुष्य ही नही। पर जिसके हो, वह बहुत बड़ा आदमी है।"

इस घटना के बाद, मैंने अपना सूट धुलवाना चाहा। मै नगर भर में घूम आया, पर किसी ने उसे धोना स्वीकार नही किया। मैंने सोचा अब मै क्या करूँ ? मैंने फोन उठाया और एक क्लीनर को फोन किया, उसी को जो मुझे मना कर चुका था।

"मैं चित्रकार सत्यदेव का सैक्रेटरी हूँ। सत्यदेव जी जानना चाहते हैं कि—।" वह रोककर बोला—"हाँ, हाँ, हम तुरन्त ही आपका ऑर्डर बुक किये लेते है। हम हर प्रकार से सन्तोषप्रद काम करेंगे।" मैं स्वयं सूट को ले गया और अपने को चित्रकार का सैक्रेटरी बताया। बड़े दोस्ताने के तरीके से वह मुझसे पेश आया और चित्रकार के सम्बन्ध मे बहुत सी बाते पूछीं। ऑर्डर बुक कर लिया गया।

मेरे सैक्रेटरी ने वे सब काम किये जो मैं खुद न कर सका। मुझे अपने सैक्रेटरी से घृणा भी हुई और जलन भी।

मैं बार बार सोचता "मुझ से लोग सीधे बात क्यों नहीं करते ? और सैक्रेटरी से क्यों घुल मिल कर सभ्यता से पेश आते है ?"

मै बड़े से बडे हाकिम से, जज, कलक्टर आदि से अपने सैक्रेटरी के द्वारा आसानी से मिल सका। अपने सैक्रेटरी के द्वारा मेरे सब काम बखूबी सहूलियत के साथ होगये। मुझे ज़रा भी तो अड़चन नहीं हुई।

मेरे सैक्रेटरी ने कभी कोई काम गैर कानूनी नहीं किया, नियम विरुद्ध नहीं किया। जब कभी किसी काम मे अड़चन होती, मैं तुरन्त ही अपने सैक्रेटरी को कहता और काम तुरन्त हो जाता।

यह ठीक है कि कभी कभी सैक्रेटरी से भी काम न बन पड़ता था। पर ऐसे अवसर बहुत काम होते थे। ज्यादातर कामयाबी हो जाती थी। और मैं आश्चर्य किया करता था कि आखिर सैक्रेटरी मे ऐसी क्या ख़ास ख़ूबी है।

अच्छा मुआफ़ कीजियेगा, मैंने आपका काफी वक्त ज़ाया किया

है। अब मुझे चलने की इजाज़त दीजिये। मुझे दूर जाना है। चलूँ, टैक्सी ढूँढूँ। फ़ोन कर दूँ किसी टैक्सीवाले को? हाँ, यही ठीक होगा।

"देखिये, इस पते पर आप टैक्सी भेज दीजिये। क्या कहा, टैक्सी ख़ाली नहीं है? तीन बजे तक नहीं मिल सकती?"

एक मिनिट बाद मैंने फिर फोन किया: "चित्रकार सत्यदेव का प्राइवेट सैक्रेटरी बोल रहा है। कृपाकर एक टैक्सी तुरन्त ही भेज दीजिये। पंद्रह मिनिट के अन्दर—धन्यवाद।"

देखा आपने, मेरा सैक्रेटरी कितने काम का है? धत् तेरे सैक्रेटरी की!

❀ ❀ ❀

ज़ालिम बादशाह ने आज्ञा दी—"मेरी चिड़ियों को होमर की सब कवितायें कंठ कराओ अन्यथा मैं तुम्हें अपने राज्य से निकाल दूँगा। और यदि असफल रहे तो प्राण दण्ड मिलेगा।"

"जो आज्ञा, श्रीमान् की" पंडित जी ने उत्तर में कहा। "लेकिन मुझे दस वर्ष का समय दीजिये।"

"मन्ज़ूर है", बादशाह ने कहा।

कुछ दिनों बाद पंडित जी के मित्रों में से एक ने पूछा—"आपने ऐसा असम्भव काम करने का वचन क्यों दिया?"

पंडित जी ने हँसते हुए कहा—"दस वर्षों में तो, मैं, या यह दुष्ट बादशाह, या ये पक्षी कोई न कोई समाप्त हो ही जायेंगे।"

❀ ❀ ❀

म्यूनिख़ में हिटलर पर बम फेंके जाने के दूसरे दिन सवेरे कसाइयों की दूकानों पर यह नोटिस लगा हुआ था—

"अफ़सोस है कि आज गोश्त न मिल सकेगा, क्योंकि दुर्भाग्य से कल सूअर न मारा जा सका।"

❀ ❀ ❀

विदा समय साईक्लिस्ट गली में मुड़ा, और मुड़ते-मुड़ते उसने अपने मित्र को नमस्कार किया। परन्तु उसे यह नहीं मालूम था कि दिन मे एक हौज भी सड़क में खोद दिया गया था। साईकिल का अगला पहिया हौज़ की मुड़ेर से टकराया और वह हौज़ मे जा पहुँचा।

जब वह बाहर निकला उसके चेहरे पर मायूसी ज़रा भी न थी। वह हँसकर बोला—"हमारी सरकार भी खूब है। मुफ्त के गैस-मास्क, मुफ्त के शैल्टर, और अब मुफ्त मैं बाथ का भी इन्तज़ाम। बहुत खूब!"

❀ ❀ ❀

एक किसान की बीबी की जीभ बहुत चलती थी, और दूर-दूर तक के गाँवों मे उसकी ख्याति पहुँच चुकी थी। एक दिन उसके घोड़े ने बीवीजी के एक ऐसी करी लात जमाई कि उसे अस्पताल पहुँचाना पड़ा।

किसास के घर पर लोगों का ताँता लग गया। वह समझा कि गाँववालों मे उसकी स्त्री के प्रति वास्तव में बहुत सहानुभूति है।

वह अपनी नौकरानी से बोला—"मेरे पड़ोसी ऐसे भले हैं यह मुझे अब मालूम हुआ। बिचारे कैसे मेरी मिसेज के बारे में पूछने आते हैं।"

नौकरानी बोली—"यह बात नहीं है। अधिकांश तो यह दर्याफ्त करने आते हैं कि आप घोड़े को बेचना चाहें तो ख़रीद ले।"

❀ ❀ ❀

थेमिस्टॉक्लिज़ नामक एक प्रसिद्ध सैनिक और राजनीतिज्ञ हो गया है। एक अवसर पर उसने अपने छोटे पुत्र से कहा—"मेरे बेटे, यूनान भर मे तुम सबसे अधिक शक्तिशाली हो।"

"यह क्योंकर?" पुत्र ने पूछा।

"यह ऐसे, कि एथिन्स के लोगों की यूनान भर पर हुकूमत है, मेरी एथिन्स निवासियों पर तुम्हारी मा की मुझ पर और मा पर तुम्हारी।"

❀ ❀ ❀

शराबी ने सवेरे तीन बजे द्वार खटखटाया।

"तुम क्या चाहते हो?"

"क्या आपका नाम मि० जोन्स है?" शराबी ने पूछा।

"नहीं", मकानदार ने उत्तर दिया। "मेरा नाम ग्रीनवुड है।"

"आपको ठीक मालूम है कि आपका नाम मि० जोन्स नहीं है?" शराबी ने ज़ोर देकर पूछा।

"बेशक नहीं है", मकानदार ने क्रोध में कहा।

शराबी ने कहा—"अगर आप मि० जोन्स नहीं हैं तो आपने दरवाज़ा क्यों खोला?"

❀ ❀ ❀

एक आदमी शराबख़ाने में घुस गया और एक ग्लास शराब माँगी। बारमैन ने पूछा—"क्या आप यहाँ के पुराने पियक्कड़ हैं?" "नहीं, तो। मै आज ही इस शहर में आया हूँ और कल यहाँ से चला जाऊँगा।"

"तब तो मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि मै आपको शराब नहीं पिला सकता।"

बिचारा पियक्कड़ वहाँ से चलकर दूसरे शराबखाने मे जा घुसा।

बारमैन ने पूछा—"आपके पास अपना ग्लास है?" "नहीं।"

"तब तो अफसोस है। यहाँ केवल उन्हीं को शराब मिलती है जो अपना ग्लास अपने साथ लाते है।"

निराश होकर पियक्कड़ प्यासा ही वहाँ से भी चल दिया।

एक बार और उसने कोशिश करने की सोची। ज्योंही वह एक शराबख़ाने मे घुसा, उसने एक मेज पर से एक ख़ाली झूठा ग्लास उठा लिया। सामने ग्लास को रखकर उसने बारमैन से शराब माँगी।

बारमैन ने सिर हिलाकर कहा—"न। प्रत्येक पियक्कड़ को केवल एक ही बार पिलाने का यहाँ नियम है।"

❀ ❀ ❀

"यार, मुझे पाँच रुपये उधार दो।"

"उधार देने से दोस्ती मे फर्क आ जाता है, और हमारी तुम्हारी दोस्ती पाँच रुपये से अधिक मूल्य रखती है।"

"तब फिर दस दे दो।"

❀ ❀ ❀

ग्राहक लपककर कैमिस्ट की दुकान में घुस गया और चिल्लाकर बोला—"तुमने मुझे बजाय कुनैन के स्ट्रिकनीन दे दी?"

"मुआफ फर्माइयेगा। साढ़े तीन आने और दे दीजिये फिर?"

❀ ❀ ❀

सुबह का वक्त था। सब तरफ खामोशी थी। सन्तरी पाइप का मजा ले रहा था।

दूर से ही उसने कर्नल को देख लिया और पाइप को अपनी जेब मे रख लिया।

जब कर्नल उसके निकट आया, पूछने लगा—"क्या तुम अभी पाइप नहीं पी रहे थे? दिखाओ मुझे अपना पाइप।" संतरी ने पाइप निकालकर दिखाया। कर्नल देखकर चलता बना।
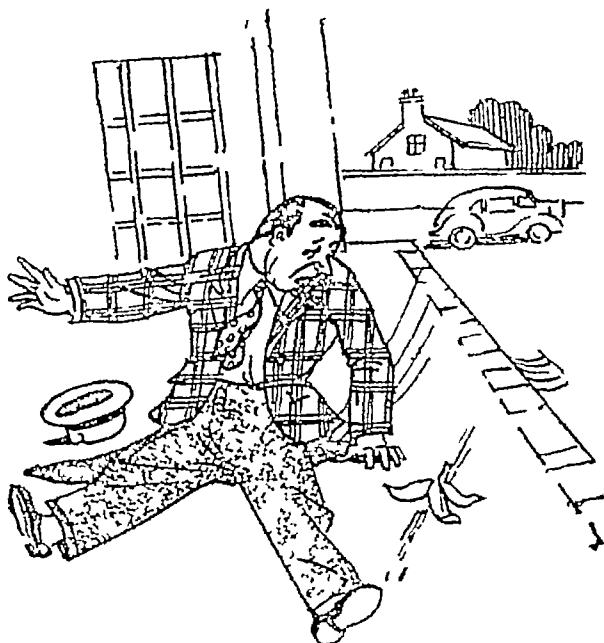
"मेरा दुर्भाग्य !"

सन्तरी ने फिर अपना पाइप दूसरी पॉकेट से निकाल लिया और पीने लगा।

"मेरे बूढ़े दादा बड़े ही बुद्धिमान थे। उनका कहना था कि सदैव हर एक चीज़ का जोड़ा रखो। फिर मुसीबत मे कभी न पड़ोगे।"

❀ ❀ ❀

क्रोध में भरी हुई पत्नी बोली—"मैं घंटों से इन्तज़ार कर रही हूँ कि आप क्लब से अब आवें, अब आवें।"

तङ्ग आया हुआ पति—"और मैं घंटों से क्लब में यही मना रहा था कि जब देवीजी सो जायँ तभी चला जाय।"

❀ ❀ ❀

एक मरीज अपने गले का इलाज कराने के लिये एक डाक्टर के यहाँ पहुँचा। जब डाक्टर ने परीक्षा करके पूछा कि आख़िर किस कारण आपका गला ऐसा हो गया, मरीज़ बोला—"सिग्रेट।"

"अल्लाह! तो बेइन्तहा सिग्रेट पीने का यह नतीजा है!" डाक्टर बोला। "जी नहीं, जनाब", मरीज़ बोला—"माँगते-माँगते यह हालत हो गई है। मिली ही नहीं।"

❀ ❀ ❀

कॉर्पोरल—"अच्छा जोन्स, बन्दूक साफ करने के पहले तुम क्या करते हो?"

रङ्गरूट—"साहब, यह देख लेता हूँ कि किसी और की बन्दूक तो नहीं है।"

❀ ❀ ❀

हिटलर एक पागलख़ाने का मुआयना कर रहा था। पागल पंक्ति में खड़े हो गये और जब हिटलर आया सबने, एक को छोड़कर जो कि कतार के आख़िर में खड़ा हुआ था, नात्सी सलाम झुकाया।

"ओ, तुम," हिटलर ने चीख़कर कहा—"तुमने क्यों नहीं सलाम किया?" "मैंने? मैं गार्ड हूँ, पागल नहीं," उसने उत्तर दिया।

❀ ❀ ❀

बिजली की केटली

स्नेहमयी बड़ी उमङ्ग से बोली—"यह देखो, बिजली की केटली।"

प्रेम ने मानों बड़े एहसान के साथ उसकी ओर देखा।

प्रेम बोला—"साधारण बोलचाल मे इसका नाम है केटली, लेकिन, प्रिये, वास्तव मे है यह तापोत्पादक। व्यक्तिगत रूप से तो मैं इसे संस्कृति और सभ्यता फैलानेवाली ही कहूँगा।"

पति पत्नी दोनों ने उसे प्रत्येक कोण से देखा। चाँदी चढ़ा हुआ हैन्डिल, पीले रङ्ग का फ्लैक्स, और चमचमाता हुआ ताँबा, सभी कुछ दर्शनीय था। और पीछे की ओर तक तख्ती पर उसके इस्तेमाल करने की विधि लिखी हुई थी। कुल जमा छ: आने की करैन्ट का ख़र्च था और बारह-पन्द्रह मिनट मे कोई भी चीज उबाली जा सकती थी।

प्रम ने अचक से केटली को उठाया और घर से बाहर चला

गया। उसने मन में कहा—"मैं इसमें पानी भरकर सब पड़ोसियों को दिखाऊँगा कि कैसे पानी गर्म किया जा सकता है। बहुत ज़रूरी है कि लोग संस्कृति सीखें। मुझे ऐसी चीज़ें बहुत अच्छी लगती हैं।"

किन्तु किसी कारण से स्नेहमयी सशंकित हो उठी। वह बोली—"देखो, तुम चुप रहो। किसी को यह केटली मत दिखाओ। मेरे दिल में भय सा लग रहा है।"

पर प्रेम हॉल में पहुँच भी चुका था, और वह केटली को ऊँचा करके गर्व से दिखा रहा था।

हॉल में काफी भीड़ थी और पड़ोस के भोजनालय में शोर भी खूब हो रहा था। प्रेम को देखकर सब शान्त हो गये।

प्रेम को कुछ अजीब सा लगा। पर वह उमङ्ग में आकर कहने लगा—"देखो, ताप पैदा करने की नई तरकीब। इसके इस्तैमाल से दो लाभ हैं—जीवन में संस्कृति का प्रवेश और कम खर्च।"

चूल्हे के पास जो व्यक्ति था वह हँस पड़ा, और पर्चूनीवाले की पत्नी बोल उठी—"हमें न संस्कृति दरकार है, न खर्चे में कमी! यह काम मुनीम हमारा खूब समझता है।"

इस पर बहुत लोग बोल उठे कि ऐसी चीज़ों में बिजली बहुत खर्च होती है और पैसा भी बहुत लगता है। प्रेम उनकी बात सुनकर अपने कमरे में चला आया। वह बहुत खिन्न था।

कुछ देर बाद एक दयालु बुढिया प्रेम से बोली—"तुमने इन लोगों को केटली दिखाकर अच्छा नहीं किया। तुम्हें व्यर्थ पछताना पड़ेगा। देख लेना।"

"मैंने तो इस इरादे से दिखाई थी कि ये लोग संस्कृति और सभ्यता सीखें," प्रेम बोला।

"तुम हो निरे बच्चे", बुढ़िया बोली। इन सब के जीवन में संस्कृति

है। प्रत्येक के पास एक नहीं, दो-दो बिजली की कढ़ाइयाँ है, तीन-तीन लोटे हैं, बिस्तरों मे छिपे हुए। लेकिन ये सब बेहद चालाक है, और इस ताक मे रहते हैं कि कोई दूसरा उनकी बिजली का ख़र्च देवे। अब तुमने अपनी केटली दिखाई है, देख लेना, ये सब ख़ूब करेन्ट इस्तैमाल करेंगे और बिल तुम्हें चुकाना पड़ेगा।"

महीने के अन्त मे प्रम को बिल मिला, करीब सौ रुपये का। आम तौर से पहले छ: या सात रुपये का बिल आया करता था। घबराकर वह प्रबन्धकारिणी समिति के पास शिकायत करने गया।

"भाइयो, क्या यह सम्भव है कि दो व्यक्ति चाय बनाने मे इतनी बिजली ख़र्च कर सके? यदि मैंने चाय की दूकान भी खोली होती और पाँच या सात आदमी नौकर रखे होते, तब भी मै इतनी बिजली नहीं ख़र्च कर सकता था। इस केटली के साथ मे शर्त थी कि चार-पाँच रुपये महीने से अधिक की बिजली कदापि ख़र्च न होगी।"

प्रबन्धकारिणी के सदस्य प्रेम की बात पर केवल हँस भर दिये। प्रेम ने फिर कहा—"चार रुपये केवल! यह तो धोखा है सरासर! मैं हर्गिज़ इतना ख़र्च न दूँगा। मै नालिश करूँगा। चाहे कुछ हो मै कभी न दूँगा।"

रात के वक़्त प्रम ने अपना कोट पहना, कॉलर ऊँचा किया और टोपा पहन घर से बाहर निकल पडा। अपने पड़ोसियों की खिड़कियों मे से उसने झाँकना शुरू किया। पहले उसने मैनेजर की पत्नी के घर में झाँका। वह लोहा करती जाती थी और कपड़ों का ढेर चारपाई पर क़रीने से रखती जाती थी।

फिर जल्दी से दूसरी खिड़की में से प्रेम ने झाँका। इञ्जीनियर साहब सपरिवार भोजन कर रहे थे और उनके पास मेज़ पर प्लेट लगा हुआ कैसिरोल (वह बर्तन जिसमे खाना पकाया जाता है) रखा था और प्लग बाकायदा लगा हुआ था। मुस्कराता प्रेम वहाँ से चल दिया।

आखिरी खिड़की उसी बुढ़िया की थी। प्रेम ने मन में सोचा—"यहाँ झाँकना व्यर्थ होगा।" तब भी उसने झाँककर देखा।

कमरे में न केटली थी न कैसिरोल। प्रेम चला ही जानेवाला था कि उसकी नज़र फ्लैक्स पर पड़ गई जो पलङ्ग के नीचे से होकर कमरे के आर-पार पड़ा हुआ था। उसी क्षण वह बुढ़िया कुर्सी पर से उठी, चौकन्नी होकर उसने चारों ओर देखा, और गद्द को उठाया। एक बिजली की अँगीठी पलङ्ग पर रखी हुई थी!

प्रेम से यह सब देखा न गया। उसने खिड़की में घूँसा मारा। शोर सुनकर खरगोश की तरह बुढ़िया भाग खड़ी हुई। दूसरे दिन सवेरे प्रेम भोजनालय में गया और महिलाओं से बोला—"केटली को मैं वापस कर आया। उससे कोई लाभ न था। बेकार की चीज थी।"

उसी सन्ध्या को पड़ोसियों ने यह अफवाह उड़ा दी कि प्रेम ने बहुत सी बिजली की चीजे मँगाई है, जिनमे एक बड़ा बिजली का चूल्हा है और एक खास चूल्हा अंडे उबालने के लिये भी है।

"इन पड़ोसियों में तो लेशमात्र भी विवेक बुद्धि नहीं है," दयालु बुढ़िया ने आह खीचकर कहा।

❀ ❀ ❀

जब कुमारी ने तीसरी बार भी उससे विवाह करने से इन्कार कर दिया; नवयुवक ने पूछा—"भला मैं भी तो जानूँ, तुम कैसे आदमी से विवाह करना चाहती हो?"

कुमारी—"मैं उसी से विवाह करूँगी जो बहुत चरित्रवान्, सुदृढ़, दुनियादार हो और सब कोई उसकी प्रशसा करता हो।"

खिसियाया हुआ नवयुवक बोला—"तो फिर सुनो, तुम चूक गई। श्रीमती चर्चिल ने उसे हथिया लिया। अब तुम बैठी हाथ मलो।"

❀ ❀ ❀

जब अफ़सर मेस-रूम (भोजनालय) मे पहुँचा, उसने उन सिपाहियों से जो वहाँ खाना खा रहे थे पूछा—"तुम्हें कोई शिकायत तो नहीं है ?"

बहुतों को शिकायते थीं। एक रङ्गरूट ने लपककर शिकायत की कि उसकी प्लेट मे आधी जली हुई सिग्रेट पड़ी हुई थी।

अफसर ने आश्चर्य प्रगट करते हुए कहा—"अच्छा, आधी जली हुई सिग्रेट थी! तो क्या आपको पूरे बीस के पैकेट की आशा थी ?"

❀ ❀ ❀

एक कार में जो एक रेगिस्तान में जा रही थी एक अरब भी बैठा हुआ था। जमीन बडी ऊबड़-खावड़ थी और बहुत धचके लग रहे थे। एक जगह पर तो उसका चलाना ही मुश्किल पड़ गया। नतीजा यह हुआ कि गाड़ी उलट गई और अरब दूर जा गिरा। बजाय ड्राइवर पर गुस्सा होने के अरब ने झाड़-पोंछकर यह कहकर बेहद मुआफी माँगी—"मुआफ कीजियेगा, मैंने अभी तक इन गाड़ियों पर बैठना नहीं सीख पाया है।"

❀ ❀ ❀

मालिक—"इस काम के लिये तुम्हें ऑफिस के प्रबन्ध करने की जानकारी लाजिमी है। वेतन फी हफ्ता चार पौण्ड होगा।"

उम्मेदवार—"मै कुछ पढा-लिखा नहीं हूँ। मै तो फैक्ट्री मे काम चाहता हूँ।"

मालिक—"उसके लिये फैक्टरी के फोरमैन से मिलो। वेतन फी हफ्ता आठ पौण्ड मिलेगा।"

❀ ❀ ❀

लड़की—"इस मुर्गी के अन्डे का मैं नाश्ता करूँगी।"

किसान—"न। यदि यह मुर्गी अन्डा देगी, तो मैं उसे म्यूजियम को बेच दूँगा। यह मुर्गी नहीं है, मुर्गा है!"

❀ ❀ ❀

नीग्रो—"देखते नहीं, रात मे उडने के लिये मुझसे बढकर उडाका नहीं मिल सकता।"

सड़क के बीच मे एक पत्थरों का ढेर था और उस पर एक लैम्प रक्खी हुई थी। एक बूढ़ा बैठा चौकीदारी कर रहा था।

"यह लैम्प किस लिये रखी है?"

"जिससे कि मोटरवाले पत्थरों के ढेर को देख सके।"

"पर यह पत्थरों का ढेर क्यों रख छोड़ा है?"

"लैम्प रखने के लिये। और किसलिये?"

❀ ❀ ❀

किसान—"तुम बहुत बहादुर मालूम होने हो जो ऐसी आँधी मे भी पैराशूट के जरिये नीचे उतर आये।"

सिपाही—"मैं पैराशूट से उतरकर नहीं आया हूं। मै इस खेमे के साथ उड़ गया था, यार।"

❀ ❀ ❀

अपराधी

जब कर्नल श्मर्क को प्राइवेट मूलर के अपराध का समाचार मिला उसे बेहद क्रोध चढ़ आया।

मेज पर घूँसा मारकर कर्नल उबल पड़ा, "क्या कहा ? मेरे सिपाही ने ऐसा व्यवहार किया ? मेरे सिपाही ने ?"
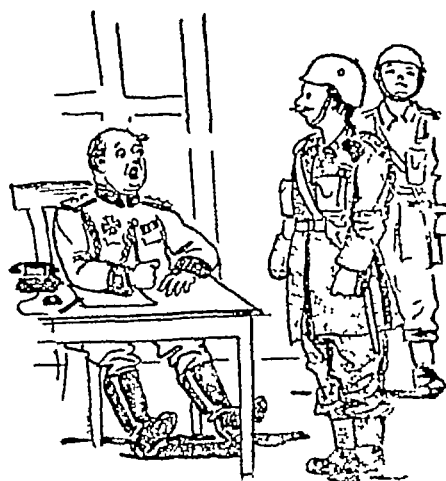
एन० सी० ओ० उतना ही क्रोध दिखाने की चेष्टा करता हुआ बोला—"जी हाँ, हुजूर।"

"और उस बदमाश को, जर्मन वर्दी पहने हुए भी, वैसा कहते हुए शर्म न आई ?"

"बिल्कुल नहीं, हुजूर।"

"मैं उसको शर्माऊँगा। उसे फौरन हाजिर करो।"

दूसरे ही क्षण प्राइवेट मूलर काँपता हुआ कर्नल श्मर्क के सम्मुख अटेन्शन पर आ खडा हुआ।

कर्नल श्मर्क एन० सी० ओ० से बोला—"पहले मेरे इस प्रश्न का उत्तर दो कि मूलर का दिमाग तो ठीक ठिकाने है ? तुमने उसमें कोई खास बात देखी है ?"

"जी नहीं, कह नहीं सकता एक बात अलबत्ता है। जब रूसी तोपें चलती हैं, तो इसके होश हवास फाख्ता हो जाते हैं।"

"अच्छा, यह तो कोई खास बात नहीं है। मेरी भी यानी यह हालत तो हर एक की हो जा सकती है।"

कर्नल श्मर्क खाँसा और मूलर की ओर देखने लगा और, उस पर क्रोध दिखाता हुआ बोला—

"अच्छा यह बताओ, बदमाश, तुमसे ऐसा अपमानजनक दुर्व्यवहार कैसे बन पड़ा ?"

मूलर ने उत्तर दिया—"हुजूर, भूख के मारे मेरे प्राण निकले जा रहे थे।"

"हाँ तो, रोटी की खातिर तुम सब कुछ बेच सकते हो ? तुम बड़े नीच हो। तुम्हारा कोई आदर्श नहीं। तुम भूखे थे और तुमने तुमने "

"मैंने, हुजूर, बुढ़िया से एक रोटी का टुकड़ा माँगा था।"

"तुम स्वीकार करते हो कि बजाय चुराने के तुमने एक रोटी के टुकड़े के लिये एक रूसी औरत से भीख माँगी ? बजाय जबर्दस्ती छीन लेने के, तुमने भीख माँगी ? क्यों ?"

"जी हाँ, हुजूर, मैंने केवल उससे रोटी माँगी।"

"तुमने उससे भीख माँगी जबकि तुम उसे मारकर रोटी छीन ले सकते थे। यही तो जर्मन फौज का सिद्धान्त है। बताओ, क्या तुम उसको मार नहीं सकते थे ? अपनी बन्दूक से मारना सम्भव था न ?"

जी हुजूर, मार सकता था—"मुझे खेद है कि मैंने उसे नहीं मारा।"

"मूलर, तुम मूर्ख हो। तुमने सारी पल्टन का मुँह काला किया है। तुम सिपाही हो या भिखारी ? क्या तुम्हारी बुद्धि ने तुमको नहीं धिक्कारा जब तुमने इस बेगैरती से रोटी लेकर खाई ?"

"मुझे तो ऐसा कुछ नहीं लगा, हुजूर। मैं तो उसे बहुत जल्दी निगल गया था।"

"और सिपाहियों ने भी तुम्हारी तरह भीख माँगी थी ?"

"जी नहीं, हुजूर, उन्होंने माँगी नहीं, बल्कि जबर्दस्ती छीन ली थ। मुझे उनका सा व्यवहार करने की सूझी हीं नहीं। गलती हुई, कर्नल साहब। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, फिर कभी ऐसा नहीं होगा।"

कर्नल का उसकी ओर ध्यान ही नहीं था। वह बड़बड़ा रहा था—

"हमारे पवित्र झन्डे का कैसा भारी अपमान किया है इसने ! हमारी पल्टन के मुर्दे भी अपनी-अपनी कब्रों मे क्रोध से तिलमिला उठेंगे कि मूलर ने रूसी औरत से, वह भी बुढिया से, रोटी के टुकड़े के लिये भीख माँगी थी।"

"मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मै अपने आज के अपराध का प्रायश्चित करूँगा। मै कसम खाकर कहता हूँ कि मैं आज पाँच बूढ़ी रूसी औरतों को मारकर सिपाही की तरह अपनी रोटी उनसे छीन लूँगा।"

"एन० सी० ओ०, तुम देखते रहना कि मूलर अपनी प्रतिज्ञा को कैसे पूर्ण करता है। जो रोटी यह खाये उसका पूरा ब्यौरा मुझे बताना। अच्छा, मूलर, अब तुम जा सकते हो।"

मूलर ने फौजी सलाम किया और वहाँ से चलता बना। कर्नल श्मर्क ने नोटबुक मँगाकर डिवीजनल स्टाफ की जानकारी के लिये अपनी पल्टन के चरित्र को उज्ज्वल बनाये रखने की आवश्यकता पर एक नोट लिखा।

❀ ❀ ❀

कन्डक्टर—"इस लड़के का किराया और लाओ।"

लड़के का पिता—"लड़के की उम्र सिर्फ तीन साल की ही तो है।"

"तीन साल की है ! जरा सूरत तो देखो, सात साल से कम का न होगा। मैंने बहुत बच्चे देखे है।"

पिता ने लड़के की ओर बडे ध्यान से देखा और फिर कन्डक्टर से बोला—"आप ही बताइये यदि यह लडका चिन्ता करता है तो यह क्या मेरे बस की बात है ?"

❀ ❀ ❀

"हमदर्दी किसे कहते है ?"

"जब तुम किसी को पैसा नहीं देना चाहते, उसको हमदर्दी दे देते हो। समझ गये ?"

❀ ❀ ❀

बच्चे ने पिता से पूछा—"पिताजी, मैं कहाँ से आया हूँ? बताइये न।"

पिता बहुत सकुचाया, पर धीरे-धीरे सब बातें उसने छोटे बच्चे को समझाईं। बच्चा बड़े ध्यान से सुनता रहा। जब पिता समझा चुका पुत्र से बोला—"अच्छा, तुम यह बताओ तुमने मुझसे पूछा तो क्यों?"

बच्चा हवाई जहाज़ से खेल रहा था। अपने पिता की ओर बगैर देखे बोला—"कोई विशेष बात नहीं थी। यों ही पूछ लिया। बात यों है कि एक लड़के ने स्कूल में कहा था कि वह बम्बई से आया है। उस पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और उत्सुकता हुई कि मैं भी जानूँ मैं कहाँ से आया हूँ, बस।"

❀ ❀ ❀

मुद्दई—"जब से शादी हुई है तभी से मुझ पर चीज़ें फेंका करती है।"

मजिस्ट्रेट—"और आज बीस वर्षों के बाद शिकायत लेकर आये हो?"

मुद्दई—"क्या करता, अब उसका निशाना चूकता जो नहीं।"

❀ ❀ ❀

नया किरायेदार—"आपने विज्ञापन में कहा था कि इस कमरे से आसमान भी दिखाई देता है।"

मकान मालकिन—"अच्छा तो फिर, है तो सही वह रोशनदान। क्या झूठ कहा था?"

❀ ❀ ❀

दर्ज़ी—"तुम अब ९९ वर्ष के हुए। सूट पहन कर क्या करोगे?"

बूढ़ा—"क्या तुम नहीं जानते कि ९९ वर्ष की उम्र के बहुत कम आदमी मरते हैं। हिसाब तो यही सिद्ध करते हैं।"

❀ ❀ ❀
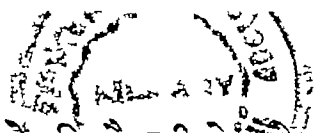
पिछली गर्मियों में इस गरज से कि फैक्टरी के लोग मुस्तैदी से काम करें अफसर ने जगह-जगह पर बोर्ड लगवा दिये । जिनमे लिखा था—"जो कुछ करना है, अभी कर डालो ।"

जब कई सप्ताह बीत गये तो किसी ने पूछा कि कहिये साहब, अब आपके यहाँ कैसा काम हो रहा है । उत्तर मिला—'कुछ न पूछो । मैं तो उसका ज़िक्र भी करना पसन्द नहीं करता । खज़ान्ची चार हज़ार रुपया लेकर भाग गया । दूसरे बाबू साहब मेरे सैक्रेटरी को लेकर न जाने कहाँ लापता हो गये हैं । तीन टाइपिस्टों ने तरक्क़ी के लिये दरख्वास्त दे रखी है, और फैक्टरी के मजदूरों ने हड़ताल करने की धमकी दी है । और ले-देकर मेरे चपरासी ने भी ज़हाज पर नौकरी कर ली है ।"

❀ ❀ ❀

एक जर्मन सिपाही रौटरडम के रेलवे स्टेशन के प्लैटफार्म पर अपना ट्रन्क छोड़कर कहीं चला गया । दो घंटे बाद लौटा, तो उसने अपना ट्रन्क न देखा । इस पर वह बोला कि डच लोग बड़े चोर होते हैं ।

एक रेलवे के अफ़सर ने समझाते हुए कहा—"यह तो कुछ भी नहीं है । जब मैं बर्लिन के स्टेशन पर उस रोज़ गया, मैं अपना सामान क्लोकरूम मे रखवाकर चला गया । लौटने पर न मैंने क्लोकरूम पाया और न बर्लिन स्टेशन ही । वहाँ कुछ था ही नहीं ।"

❀ ❀ ❀

बहुत कुछ सवाल जवाब के बाद भी महिला जरा न घबडाई । आख़िरकार बैरिस्टर साहब जो उसे बहुत कुछ तङ्ग कर चुके थे, बोले—"आपने तो कहा था कि आप कुछ भी पढ़ी-लिखी नहीं हैं, किन्तु मेरे सवालों का उत्तर तो बे झिझके हुए ख़ूब ही ठीक दिया ।"

"जी हाँ", महिला ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया । बेवकूफ़ी के सवालों का जवाब देने के लिये शिक्षित होना कोई जरूरी भी तो नहीं ।"

❀ ❀ ❀

एक श्रीमतीजी दूसरी से—"भला यह बताओ कि तुमने उस चोर से विवाह क्यों किया है?"

दूसरी श्रीमती—"हल्ला जो नहीं करता, घर मे चुपचाप बना रहता है।"

❀ ❀ ❀

सुनो मैरी, जो पिछली नौकरानी थी उसकी पुलिसवालों से बहुत दोस्ती थी। उनसे बची रहना।"

"मुझे तो उनकी सूरत से नफरत है, मेरे पिता चोर जो हैं।"

❀ ❀ ❀

कैदी को सजा का हुक्म हो जाने के पूर्व मजिस्ट्रेट ने उससे पूछा—"कभी तुमने कोई भला काम भी अपनी जिन्दगी में किया है?"

कैदी बोला—"किया क्यों नहीं। रात दिन तीन-चार गुप्त विभाग के सिपाहियों को काम में लगाये रखा है।"

❀ ❀ ❀

नये क्लार्क ने कमरे में जाकर मैनेजर से कहा—"आपसे मिलने के लिये एक महिला आई हुई हैं।"

"क्या खूबसूरत हैं?"

"जी हाँ हैं तो।"

"तो भीतर भेज दो।"

दस मिनट बाद क्लार्क के लिये भीतर से बुलावा आया।

मैनेजर क्रोध में बोला—"तुम्हें खूबसूरती और बदसूरती की बहुत तमीज है, क्यों?"

"मैं कैसे कह देता। यह आपकी पत्नी ही निकल आतीं तब?"

"ठीक है, वही तो वह थीं ही", मैनेजर ने बुरा मुँह बनाते हुए उत्तर दिया।

❀ ❀ ❀

एक इटालियन नाविक एडमिरल के दफ्तर में ताव में भरा हुआ दन-दनाता चला गया और बोला—"बन्दरगाह मे इन्तजार करते-करते मैं तो ऊब गया। तबियत चाहती है कि सारी अँगरेज सेना को तोप से उड़ा दूँ।"

एडमिरल शान्त स्वर में बोला—"ऐसा ही उत्साह जवाँमर्दों को शोभा देता है। मैं तुम्हारी शीघ्र ही तरक्की कर दूँगा।"

नाविक बहुत निराश दीख पडा। "अरे, क्या तुम अब भी प्रसन्न नहीं हुए ?" एडमिरल ने पूछा।

"जी नहीं। मैं समझता था, आप मुझे पागल करार देकर निकाल बाहर करेंगे।"

❀ ❀ ❀

सन्तरी ने चिल्लाकर कहा—"कौन जा रहा है ?"

शराब पिये हुए रँगरूट ने उत्तर दिया—"लॉर्ड गॉर्ट।'

सन्तरी ने फिर वही प्रश्न दुहराया, और उसे फिर वही उत्तर मिला। सन्तरी ने उस पर गोली चला दी।

जब रँगरूट को होश आया, सार्जन्ट ने उससे पूछा—"तुमने सन्तरी को जवाब क्यों नहीं दिया ?"

रँगरूट ने कहा—"यदि लॉर्ड गॉर्ट की ऐसी दशा की जा सकती है तो भला मुझ सरीखे रँगरूट की जो भी दुर्दशा हो जाय ठीक ही है।"

❀ ❀ ❀

मैकिन्टॉश (एक साधारण स्कॉच नाम) टैक्सीवाले से किराये के ऊपर झगड़ रहा था। टैक्सीवाला जोर-जोर से चिल्लाकर बात करने लगा और उस पर मैकिन्टॉश को क्रोध आ गया।

"तुम नहीं जानते मैं कौन हूँ ? मैं हूँ मैकिन्टॉश।"

टैक्सीवाले ने नाक फुलाकर कहा—"अरे तुम मैकिन्टॉश नहीं, एकदम नया छाता सही। मेरे सिगट्टे से। मेरा किराया मुझे दो।"

❀ ❀ ❀

सफलता

पोश्का सर्कस ट्रेनिंग स्कूल का विद्यार्थी था, और जाड़े की छुट्टियाँ बिताने अपने घर आया हुआ था। जिस मेज़ पर नाश्ता खा रहा था उसी पर वह बैठा भी हुआ था। बाहर बर्फ बिछी हुई थी। कुत्ता भों-भों कर रहा था। उसकी मा उसके पास खड़ी हुई उससे बातें कर रही थी।

"यहाँ घर-घर में सबके बच्चे कितने बुद्धिमान हैं! वह लड़की वीरा थर्ड ईअर में पढ़ रही है। इञ्जीनियर बनेगी। जब उसकी पढ़ाई खत्म हो जायगी, सभी उसके माता-पिता से पूछेंगे—"तुम्हारी लड़की क्या कर रही है?" "हमारी लड़की", वे कहेंगे, "इञ्जीनियर है, सर्वेअर है" ऐसी बातें कहने-सुनने में कितनी अच्छी लगती हैं।"

पोश्का नाश्ता करता रहा और उसकी मा कहती रही—"एक तुम हो कि जो चीज़ हाथ लगी उसे इधर उधर फेंकते फिरते हो।" बात यह थी कि पोश्का अण्डों को उछाल-उछालकर लपक रहा था। "हाँ तो, मैं कह रही थी कि शैल का लड़का डाक्टरी पढ़ रहा है। जब उसकी पढ़ाई खत्म हो जायगी वह बीमार आदमियों का इलाज किया करेगा। पर तुम बताओ, तुम क्या करोगे? देखो, उस प्लेट को सिर पर न रखो। वह टूट जायगी।" पोश्का ने प्लेट उतारकर रख दी। "औरों के बच्चे, बच्चे है," वह कहती गई, फिर सहसा रुक गई। "कुत्ता क्यों भोंका था? कोई मिलने के लिये हमारे यहाँ आ रहा होगा। और तुम अब उस कुर्सी से क्या कर रहे हो? कुर्सी बैठने के

लिये होती है, न कि माथे पर टेकने के लिये। रखो उस कुर्सी को ठिकाने से। कोई देखेगा तो क्या कहेगा ?"

सामने का द्वार खुला और शिक्षा विभाग का डाइरैक्टर सैफोनव जो पोश्का को पहले पढ़ा चुका था, अन्दर आया। पोश्का ने अपने मास्टर साहब का स्वागत किया और उसकी मा ने शिकायत करनी शुरू कर दी—"सैफोनव, इस लड़के को समझाओ। न जाने इसने कौन सा पेशा करने की सोची है ! या तो रकाबियों को उछाला करता है, या उन्हें सिर पर चुना करता है। यदि यह विवाह करना भी चाहे, तो इसे कौन लड़की पसंद करेगी ?"

मास्टर साहब विचारे चुपचाप सुनते रहे। फिर बोले—"आज शाम को हमारे स्कूल के पुराने विद्यार्थी अपना-अपना कर्तव दिखायेंगे। यही कहने मैं तुमसे आया था।"

पहले पोश्का की मा ने आश्चर्य प्रगट किया, फिर वह ठहाका मारकर हँस पड़ी। सैफोनव पोश्का से बोला—"क्यों पोश्का आज शाम को आओगे न ?"

"अच्छा, मै आऊँगा।"

"हम तुम्हारी माताजी को सबसे आगे की सीट देंगे।" मास्टर साहब नमस्कार करके विदा हुए।

'क्या सूझ है भला ! दुष्ट कहीं का।" मेरिया मन में कह रही थी।

"बजाय इस लड़के को समझाने के, उल्टा रकाबियाँ फेंकने के लिये निमन्त्रण दे गया है। इस बूढ़े को भला क्या हुआ है ?" फिर वह पोश्का से बोली—"देखो उस वेस को उसकी जगह पर रखो। वह बहुत मूल्यवान है। असली नीले काँच की है। मैं शाम को हर्गिज़ न जाऊँगी यदि मुझे बहुत सा धन देने का भी प्रलोभन दो। भला, मैं अपने लड़के की हँसी उड़वाऊँगी वहाँ।"

खैर, किसी भी तरह हो, मेरिया तमाशे मे गई। बढ़िया कपड़े

पहने वह सबसे आगे की पंक्ति मे जा बैठी। उसे अपने लड़के का पेशा बिल्कुल पसंद नहीं था। वह चुपचाप बैठी रही और देखती रही कि कोई उसके पुत्र की हँसी न उड़ाये।"

प्रोग्राम मे अनेक खेल थे। मेरिआ शान्ति पूर्वक प्रोग्राम का आनन्द उठाती रही। सहसा सैफोनव ने कहा—"अब मॉस्को के सर्कस स्कूल का विद्यार्थी पोश्का, अपने खेल दिखायेगा।" दर्शकों ने खब तालियाँ बजाईं। मेरिआ बहुत शर्माई। पिआनो बज उठा। पोश्का ने तालियों के उत्तर में सबका अभिवादन किया। फिर उसने अपने हाथ मे पुराना टैनिस का रैकिट ले बड़ी फुर्ती के साथ उसे सीधे हाथ से फेंक बाये में लपक और आगे पीछे, और टॉगों में होकर उसे फेंक और लपककर सबको आश्चर्य मे डाल दिया। खब तालियाँ बजीं। फिर उसने उसी प्रकार पॉच पॉच टैनिस की गेंदों को एक साथ उछालकर खेल दिखाया। गेंदो के बाद, बोतलों का और बोतलो के बाद रकाबियों का उसने खेल दिखाया।

उस प्रोग्राम मे सबसे अच्छे खेल पोश्का के रहे। उसकी सी सफलता किसी को न मिली।

दर्शक उसे स्टेज छोड़ने ही नहीं देते थे और उस पर फूलों की वर्षा करके उसे फूलों से ढक दिया। किन्तु मेरिआ ने उधर से अपना मुख फेर लिया और उसमें कोई दिलचस्पी न दिखाने का बहाना किया। खेल के बाद दावत का भी प्रबन्ध था। सैफोनव ने मेरिआ को भी निमन्त्रण दिया, पर उसने निमन्त्रण स्वीकार न किया और पोश्का उसे विदा करने चला गया। जब वह दरवाजे पर से चलने लगा, उसकी मा ने उसके पेशे की कठिनाइयों के बारे में बहुत सी बातें पूछी और दिखावटी क्रोध भी प्रगट किया।

दूसरे दिन सवेरे जब पोश्का की ऑख खुली, उसने देखा कि उसकी मा उसका कन्धा पकड़कर उसे झकझोर रही है, और बड़े प्यार
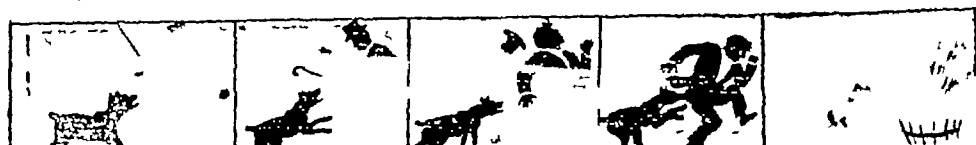
से कह रहो है—"पोश्का, ओ पोश्का, उठो ११ बज गये। चाय तैयार रक्खी है। मैंने तुम्हारे लिये दस छोटे-छोटे आलू धोकर, साफ करके रक्खे हैं। वे तुम्हारे खेल दिखाने के लिये है। कुछ बुरे नहीं हैं— गोल गोल हैं, सच्ची—और सब एक से है "

❀ ❀ ❀

"यह तुमने कैसे जाना कि वह सिपाही भलामानुस है ?"

"यदि भलामानुस न होता तो टोप उतार कर मेरी मिट्टी न लेता।"

❀ ❀ ❀

जब से मेरा लड़का ट्रक-ड्राइवर बना है मै कभी उसके मार्ग में नहीं खडा हुआ हूँ '

❀ ❀ ❀

एक दिन मानहट्टन (अमरीका) में बड़ी सख्त गर्मी पड़ रही थी। गर्मी इतनी शिद्दत की थी कि मुर्गियाँ तक उबले अंडे दे रही थीं, और कनाडा के निवासी न्यूयार्क की गर्मी से बचने के लिये उत्तरी ध्रुव की यात्रा के लिए चल दिये थे। इसी रोज एक महोदय फिफ्थ ऐविन्यू (न्यूयार्क का प्रसिद्ध क्वार्टर) में चमड़े के बूट जूते, फरकोट, मफ्लर, और दस्ताने, कन्टोप और कूनस्किन का हैट पहने हुए दिखाई पड़े।

राहगीर भी खड़े होकर इन विचित्र महाशयजी को लगे घूरने। एक पुलिसवाले ने पसीना पोंछते हुए उसे रोककर पूछा—"मुझे तुमसे कोई सरोकार तो नही है। आज बहुत सख्त गर्मी पड़ रही है, और तुम इस कदर लदे हुए हो कि न जाने कितनी सर्दी पड़ रही है। मामला क्या है ?" महाशयजी मुस्कराते हुए बोले—"जैसा मूर्ख तुम मुझे समझते हो, वैसा दरअस्ल मैं हूँ नहीं। मैंने हिसाब किताब ठीक रक्खा है। मैंने जाँघिया नहीं पहना है।"

❀ ❀ ❀

"जब मैं नवयुवक था तब लड़कियाँ हाल शर्मा जाया करती थी।"
"पिताजी, आप भला उनसे ऐसी क्या बात कह दिया करते थे ?"

❀ ❀ ❀

एक आइरिशमैन दूसरे से—"तुमने उस फिल्म के विरोध में जिसमे आइरिश लोगों को झगडालू दिखाया गया है क्या प्रस्ताव पास किया ?"
दूसरा—"प्रस्ताव पास किया ! उस स्थान को नष्ट भ्रष्ट कर डाला।"

❀ ❀ ❀

"मार्जरी (महिला का नाम) का मतलब क्या है यह कहने से कि उसे यूनीफार्म क्वालिटी का प्रेम पसन्द है ?"
"उसका मतलब है सैनिकों, नाविको और उड़ाकों से।"

❀ ❀ ❀

जब उसे सेना में नौकरी न मिली, वह काम की तलाश में एक लोहार की दुकान में चला गया। उसे देखभाल कर, लोहार ने अपना सबसे बड़ा हथौड़ा बाहर फेक कर कहा—"यदि तुम भी मेरी तरह से फेंक सको, तो फिर यहाँ काम शुरू कर दो।" ठिगन्ची ने निहाई को उठाकर बाहर फेक दिया और बोला—"ठीक है। तो क्या बाहर काम होगा ?"

❀ ❀ ❀

उसने अपनी नई दुकान में एक ग्राहक को आते हुआ देखा। वह बहुत खुश हुई। मन मे सोचा कि थोड़ा रौब जमाया जाय। जल्दी से उसने टेलीफोन का रिसीवर हाथ में लिया और बड़ी फुर्ती के साथ बातचीत शुरू कर दी। बातचीत समाप्त कर रिसीवर को उसने उठाकर रख दिया, और ग्राहक की ओर मुस्कराती हुई झुकी—"कहिये, आपकी क्या सेवा की जाय ?" ग्राहक थोड़ी देर खामोश रहा, फिर बोला—"मै आपका टेलीफोन कनैक्ट करने आया हूँ।"

❀ ❀ ❀

एक सौदगर ने सुना कि दक्षिणी समुद्र के किसी द्वीप में इतना सोना भरा पड़ा है कि वहाँ के निवासी हैरान हैं कि उसका वे क्या करें। उनकी हैरानगी को दूर करने के ख़याल से सौदागर ने वहाँ जाने का निश्चय किया, और एक जहाज़ मे पियाज़ भरकर वह वहाँ पहुँचा। वहाँ के निवासियों ने पियाज कभी नहीं खाई थी। उसको खाकर उन्हें बेहद प्रसन्नता हुई। और उसके बदले में उन्होंने जहाज भर कर सोना दे दिया।

इस सौदागर के प्रतिद्वन्दी को जब यह हाल मालूम हुआ तो उसने सोचा, यदि द्वीप निवासियों को पियाज़ पसन्द आई है तो लहसुन और भी ज्यादा पसन्द आयेगा। ऐसा विचार कर वह जहाज़ मे लहसुन भरकर वहाँ पहुँचा। उसका विचार ठीक निकला। लहसुन खाकर वे पियाज़ का स्वाद भूल गये।

जब उसने बदले मे सोने की इच्छा जाहिर की तो द्वीप-निवासियों ने सोचा, सोना जैसी मामूली चीज़ देना बेजा होगा। इसलिये उन्होंने अपना बहुमूल्य पियाज़ देना निश्चय किया और जहाज में जो पियाज़ बच रही थी उसे भरकर बिदा कर दिया!"

❀ ❀ ❀

एक डाक्टर कुछ रँगरूटों की परीक्षा करने मे तत्पर था। एक आदमी की छाती पर राजा और रानी गुदे हुए थे। डाक्टर उससे बोला—"तुम्हें इतना देशभक्त देखकर मुझे ख़ुशी है," रंगरूट बोला—"यह कुछ नहीं है। देखिये मै हिटलर पर आसन जमाये हूँ।"

❀ ❀ ❀

चोर—"मुझको ऐनक चाहिये।"

उसका मित्र—"किस लिये?"

चोर—"मै एक सेफ की खूँटी घुमा रहा था और बैन्ड बज उठा।"

❀ ❀ ❀

गॉल्फ़ खेलना सीखने और मोटर चलाना सीखने में यह अन्तर है कि गॉल्फ़ खेलना सीखते वक्त लाख कोशिश करो पर वार ख़ाली जाता है और मोटर चलाना सीखते वक्त वार कभी ख़ाली जाता ही नहीं।

❀ ❀ ❀

"और ये? ये तो अभी चल फिर भी नहीं सकते।"
"तुम तो हो मूर्ख। इनसे बैठे-बैठे काम कराओ।"

कर्नल साहब—"वही पुरानी रामकहानी जारी है। घर में जो सबसे अधिक मूर्ख हो, उसे फौज में भर्ती करा दो। यही बात है न ?"

नवयुवक सब-ऑल्टर्न—"जी नहीं, हुजूर। अब आपका ज़माना नहीं रहा। सब मामला उलट गया है।"

❁ ❁ ❁

"मैंने पत्रिकाओं में पढ़ा है कि गाने से खून गर्म हो जाता है। वैज्ञानिक भी ऐसा ही समझते हैं।"

"आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। मैंने तो ऐसे-ऐसे गाने सुने हैं कि खून उबलने तक लगता है।"

❁ ❁ ❁

मोटर धीरे-धीरे चल रही थी और मुसाफिर को जल्दी थी। वह ड्राइवर से बोला—"क्या इससे अधिक तेज़ नहीं चल सकते ?"

"चल क्यों नहीं सकता। मगर मुझे मोटर छोड़ने का हुक्म जो नहीं है।"

❁ ❁ ❁

"क्षमा करना मैं बड़ी मूर्खा हूँ।" बुढ़िया जहाज़ के कप्तान से बोली—"पर मुझे यह तो बताओ कि समुद्र में तुम्हें रास्ता कैसे मिल जाता है ?" "कम्पास के द्वारा। क्योंकि उसकी सुई हमेशा उत्तर दिशा की ओर संकेत करती रहती है।"

बुढिया ने पूछा—"और यदि तुम्हें दक्षिण की ओर जाना हो, तब क्या करोगे ?"

❁ ❁ ❁

डाक्टर—"तुम अपने सम्बन्ध मे विचार करना छोड़ दो और अपने काम में अपने को दफ़न करलो।"

रोगी—"राम-राम ! यह आप क्या कह रहे हैं। मेरा काम सीमेन्ट मिलाने का है।"

❁ ❁ ❁

अश्वारोही

ईगौर रूसी घोड़ा पल्टन में नौकर था। नौकरी किये उसे अभी दो साल ही हुए थे। एक दिन उसे उसके अफसर ने बुला भेजा।

"कॉमरेड ईगौर" कमिस्सार बोला, "तुम्हें खबर है तुम्हारे पिता आजकल यहीं हैं? अभी फोन किया था और हमारे यहाँ आने का इरादा भी प्रकट किया है, तुम्हें कोई उज्र तो नहीं है?"

"क्यों? मुझे उज्र क्यों होगा? आने दीजिये। आपको मालूम होना चाहिये कि मेरे पिता कॉसेक हैं।"

"यही तो बात है; वह हैं कॉसेक। अच्छी बात है।'

एक घंटे बाद ईगौर के पिता आन उपस्थित हुए।

कमिस्सार ने ईगौर से गले मिलकर कहा, "जाओ, अपने पिताजी का स्वागत करो। यह लो थैला। इसमें हमारे फार्म के सेव हैं।"

जब पिता पुत्र मैसरूम में पहुँचे, उनकी कमिस्सार से भेंट होगई। कमिस्सार ने ईगौर के पिता को अपना परिचय दिया। ईगौर के पिता ने भी अपना परिचय दिया और नाम बताया। फिर पिता ने पुत्र से अपना सब सामान दिखाने को कहा।

ईगौर ने अपनी बन्दूक और तलवार दिखाई। पिता ने हथियारों को हाथ में लेकर उनके नम्बर पूछे।

"राइफल का नं० है ११४७६६ और तलवार का नं० है ३२२८"।

"ठीक है," पिता ने नम्बर ठीक देखकर कहा।

फिर पिता ने अस्तबल देखने की इच्छा प्रकट की। रास्ते में सफेद

टाइल लगी हुई थी और खूब साफ थी। बैंचे भी साफ थीं और फर्श पर ताजा बुरादा बिछा हुआ था। कॉसेक ने सब कुछ देखकर संतोप प्रकट किया।

"तुम सब सामान तो खूब साफ़ रखते हो, इसमें कोई शक नही," पिता बोला।

"और यह घोडा मेरा है", ईगौर एक घोड़े को दिखाकर बोला।

कॉसेक ने घोड़े पर हाथ फेरा और बोला, "क्या घोड़े को साफ रखने का सब सामान भी तुम्हारे पास है ?"

इस पर ईगौर ने अपने पिता को ब्रुश कंघा, कपड़ा, और खुरों को साफ करने का चाकू दिखाया।

"अच्छा, अब इन्हें ले जाओ, मैं सब देख चुका। अब तुम अपने घोड़े को पैरेड-ग्राउंड पर ले जाने की आज्ञा दो और चलो।"

ईगौर ने कमिस्सार से आज्ञा माँग ली जो तुरन्त ही मिल गई। ईगौर ने घोड़े पर जीन कस दी।

"ऐसे नहीं कसते हैं। ऐसे कसते हैं," कॉसेक ने कसकर बताया।

थोड़ी देर में घोड़े को ठीक करके सब पैरेड-ग्राउड पर पहुँचे। पूरी पल्टन भी वहाँ खड़ी हुई थी।

पिता पुत्र से बोला, "अब घोड़े पर सवार होकर तो दिखाओ।"

ईगौर एक बार फिर घोड़े को देख भालकर उस पर सवार होगया और उसे धीमी चाल से ले चला।

"उसे दुलकी चलने दो," पिता ने चिल्लाकर कहा और ऐसे ढीले-ढाले न बैठो। यह बैठने का तरीक़ा नहीं है। पीछे क्यों इस तरह झुकते हो ?"

बेपरवाही से बैठे हुए ईगौर ने अपने घोड़े को सड़क के एक तरफ दो फुट ऊँचे फाटक की ओर मोड़ा। घोडे ने फाटक आसानी से पार

कर दिया, लेकिन ईगौर को उसने दूर धर फेका। कमिस्सार ने मुँह उधर से फेर लिया।

"हॉं, हाँ, ठीक है,," कॉसेक कठोरतापूर्वक बोला, "अब दिखाना तो कि दौड़ते-दौड़ते किस प्रकार शाख को काट सकते हैं ?"

बजाय 'तू' के पिता ने पुत्र से आप कहा। यह लक्षण बुरा था और ईगौर खूब समझता था। घोड़े को मोड़कर ईगौर उसे उन शाखों की ओर ले गया जो उसके काटने के लिये क़ायदे से रख दी गई थीं। उसने तलवार निकाली और घोड़े की चाल तेज़ कर दी। रकाब में खडे होकर ईगौर ने उन शाखों पर तलवार चला दी और ऐसा करते वक्त उसने अपने घोड़े की भौंड़ी चाल की बिल्कुल परवाह न की। उसके पिता ने क्रोध मे अपने कॉलर को ढीला किया। और अपने पुत्र से बोला : "बस, बस, होलिया। उतरो घोड़े पर से और जाओ भाड़ में।"

ईगौर चुपचाप घोड़े पर से उतर पड़ा। कॉसेक ने बिना एक शब्द कहे अपनी जाकेट उतार फेकी और घोड़े के पास जा कूदकर उसपर सवार हो गया।

"लाओ मुझे एक तलवार दो," वह ऐसे कठोर स्वर मे बोला कि घोड़े के भी कान खड़े होगये और वह बेचैन हो उठा। ईगौर के हाथों से तलवार झपटकर बूढ़े ने आज्ञा दी कि टहनियों को ठीक तरह से रख दो।

जब तक लाल फौज के सिपाही ठीक तरह से टहनियाँ रखने में तत्पर रहे, पिता घृणा की दृष्टि से पुत्र को निहारता रहा। फिर एक उसने चक्कर लगाया और एकदम घोड़े को सरपट दौड़ाया। बड़ी आसानी से फाटक फलाँगकर वह टहनियों के पास तेज़ चाल से पहुँचा और बाँये हाथ से रास पकड़कर और सीधे में तलवार ले उसने निशाने पर वार कर दिया। कासकों की भाँति रकाब में खड़े-

खड़े ही विद्युत वेग से उन्हें कलम कर दिया। टहनियाँ तुरत ही पृथ्वी पर गिर पड़ीं और वही दशा, अन्य टहनियों की भी हुई। बड़ी तेजी से, सफ़ाई से और कारीगरी के साथ उसने उन सबको काट डाला।

जब कॉसेक लौटा और घोड़े पर से उतर पड़ा, सबने तालियाँ बजाईं और तारीफ़ के पुल बाँध दिये। ईगौर ने भी तालियाँ बजाईं और अर्थभरी दृष्टि से कमिस्सार की ओर देखा।

"देखा, घोड़े पर किस तरह सवार हुआ जाता है?" पिता पुत्र से बोला। आवाज़ में जोश और क्रोध उबला पड़ रहा था। और मैं तुझसे पूछता हूँ, तूने तालियाँ क्यों बजाईं? उल्लू कहीं का! ले जा घोड़े को।'

'पिताजी, आज तो आपने कमाल कर दिया", पुत्र बोला।

"यह कोई कमाल है?" बूढ़ा बोला। अरे जब मैं नौजवान था, अपना कोई सानी नहीं रखता था। दोनों हाथों से एक ही वार में दस-दस टहनियाँ कलम कर देता था।"

"यह भला कैसे सम्भव था?" कमिस्सार ने पूछा।

"बहुत सहल है," बूढ़ा गर्व से सिर उठाकर बोला।

"अच्छी बात है, आपभी देख लीजिये," कमिस्सार ने उत्तर में कहा और ईगौर के कन्धे पर हाथ रखकर उसे घोड़े पर चढ़ने का कहा। ईगौर रकाब में पाँव धरकर सरपट घोड़े को दौड़ाता हुआ क़रीने से रखी हुई टहनियों की ओर उसे लेगया। दोनों हाथों में एक-एक तलवार थी, और घोड़ा दौडाते-दौडाते ही उसने सीधे बांये वार चलाकर टहनियों को सफ़ाई से काट फेका। यह करतब दिखा ईगौर ने फिर बहुत तेजी से घोड़े को दौडाया और फाटक फलाँगकर आ गया। पिता पुत्र का करतब देख उसके पीछे दौड़कर गया।

"शैतान कहीं का, उतर तो। बता तो, तूने मेरी दिल्लगी उड़ाने को यह सब स्वांग क्यों रचा था?"

अपराधी की भांति ईगौर मुस्कराया और उतर कर बोला—पिताजी सारी पल्टन के सिपाही आपकी घुड़सवारी देखना चाहते थे, और उसके लिये इससे अच्छा कोई तरीक़ा नहीं था।"

❀ ❀ ❀
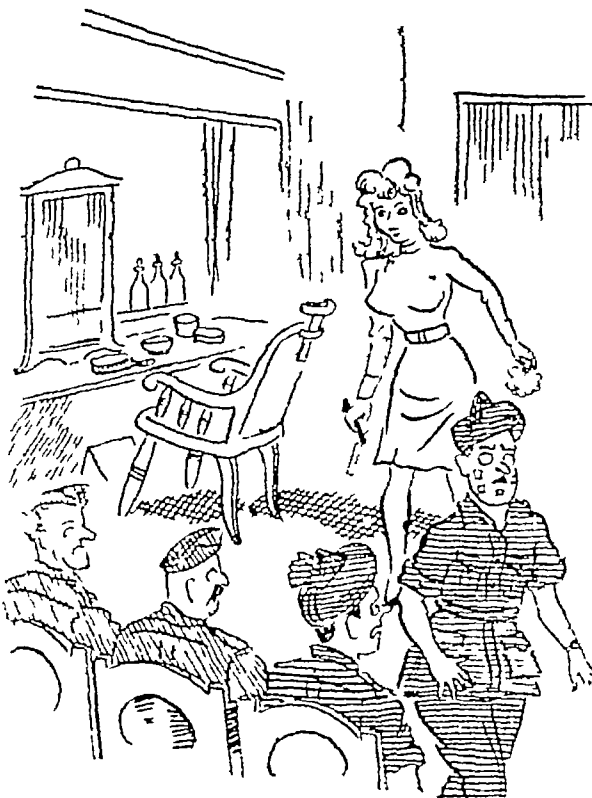
"दूसरा आदमी जल्दी चलो।"

युवक—"मुझे तुमसे एक अपना भेद कहना है—मेरा विवाह हो चुका है।"

नव युवती—" तुमने तो मुझे चौंका दिया। मै समझ रही थी कि तुम यह कहनेवाले हो कि वह तुम्हारी कार नहीं है।"

❀ ❀ ❀

सार्जेन्ट गुस्से में बोला—"इनकी ज़रा शक्ल तो देखो। छः महीने सीखते हुए हो गये और इनसे ज़रा पूछो सीखा क्या है?"

"कि सिपाही लोग मरने से क्यों नहीं डरते", एक रँगरूट थकी हुई आवाज़ में बोला।

❀ ❀ ❀

राम बोला—"मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे अधिकांश दुःखों का कारण वे बातें हैं जो कभी होती ही नहीं।"

कृष्ण—"तुम ठीक कहते हो। कुछ वर्ष हुए मैंने एक रबड़ का बगीचा ख़रीदा था और दो वर्षों तक मुझे घोर चिन्ताओं ने आ दबाया क्योंकि बड़ी सख्त सर्दी पड़ी थी। मेरा विचार था कि ठंढ के मारे सब छोटे पौधे मर गये होंगे। तीसरे वर्ष मुझे सूचना मिली कि पौधे लगाये ही नहीं गये थे।"

❀ ❀ ❀

एक बड़े बोर्डिङ्ग हाउस के दरवाज़े पर एक लड़का योंही खड़ा हुआ था।

"ऐ लड़के, मिस्टर स्मिथ कहाँ रहते हैं?" एक जल्दबाज़ महाशय ने पूछा।

"आइये, मैं आपको पहुँचा दूँ।" यह कहकर वह सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। पीछे-पीछे हाँफते जल्दबाज़ महाशयजी लगे चढ़ने। छः मंज़िलें चढ़ चुकने पर वह एक खुले दरवाज़े पर खड़ा हो गया।

"मिस्टर स्मिथ यहाँ रहते हैं।" लड़के ने बताया। महाशयजी ने झाँककर अन्दर देखा और बोले—"वह यहाँ तो हैं नहीं।"

"न, यहाँ न होंगे।" लड़के ने उत्तर दिया। "जब हम लोग ऊपर चढ़ रहे थे वह फाटक पर खड़े हुए थे।"

❀ ❀ ❀

एक या दो लेक्चर पिलाने के बाद मस्कैट्री के शिक्षक महोदय रँगरूटों की पल्टन को राइफल-रेन्ज पर ले गये। राइफलें देने के बाद वह बोले—"अब मैं तुम सब को एक-एक करके बुलाऊँगा? और तब तुम लोग बन्दूक़ चलाकर देखना।"

एक नया रँगरूट बोल उठा—"सार्जेण्ट साहब, पहले मेरा एक शक मिटा दो। क्या यह सच है कि जितना ज़ोर से घोड़ा दबाया जाय उतनी ही तेज़ गोली जाती है?"

❀ ❀ ❀

न्यूयॉर्क के एक बैंच मैजिस्ट्रेट को बेहद क्रोध चढ़ आता है जब कि उनके सामने बारबार वही कैदी पेश किये जाते हैं।

हाल ही की बात है। एक रोज एक शराबी उनके सामने पेश किया गया। उसे देखकर मजिस्ट्रेट ने क्रोध में अपनी मेज पर घूँसा मारा।

"मेरी समझ में नहीं आता कि बार-बार क्यों तुम मेरे सामने पेश किये जाते हो? सात बार तुम पकड़े गये हो और सातों बार मजबूरी मैंने तुम्हें सजा दी है। क्या मैं ही रह गया हूँ उल्लू बनाने के लिये?"

शराबी ने खीसें निकालकर कहा—

'हुजूर, मुझपर चिल्लाने से क्या फायदा? क्या इसमें भी कोई मेरा अपराध है कि आपकी तरक्की नहीं कर दी जाती?"

❀ ❀ ❀

दो विद्यार्थी यह तय नहीं कर पा रहे थे कि शाम कैसे बिताई जाय। विवेक कह रहा था कि घर पर बैठकर पढ़ाई की जाय—तबियत काम पर जमती ही नहीं थी।

एक बोला—"अच्छा, टॉस करके देखा जाय। यह लो पैसा। हैड आवे तो क्लब चलेंगे और टेल आवे तो सिनेमा।"

"यह ठीक नहीं," दूसरे ने कहा। "इन्साफ की बात तो यह है कि यदि यह खड़ा हो जाय तो हम घर पर ही टिकें और पढ़े लिखें।"

❀ ❀ ❀

"देखी उस कन्डक्टर की गुस्ताखी! वह मेरी तरफ इस तरह घूर रहा था जैसे कि मैंने किराया न दिया हो।"

"और तुमने तब क्या किया?"

"मैंने भी उसकी तरफ खूब घूरा जैसे मैंने किराया दे दिया हो।"

❀ ❀ ❀

श्याम—"तुम्हें यह घर पसन्द है न ? कहो तो खरीद लिया जाय ?"

राधा—"है तो बहुत सुन्दर ! इस गौक से जो दृश्य दिखाई देता है उसका तो मैं वर्णन ही नहीं कर सकती। जैसे कोई मेरी जबान को बन्द कर देता हो।"

श्याम—"तब तो यह जरूर ही खरीद लिया जाय।"

❀ ❀ ❀

बडी ही फुर्ती के साथ डाक्टर ने टैलीफोन को रख दिया। एक हाथ में टोप लेकर बेटी से बोला—"जल्दी से मेरा सर्जरी का बैग तो देना।"

"मामला क्या है, पिताजी ? बेटी ने पूछा।

"कोई टैलीफोन पर कह रहा था कि वह मेरे बिना नहीं रह सकता," डाक्टर ने कहा।

"एक मिनिट ठहरिये तो," बेटी शर्माती हुई बोली। "किसी ने मुझे टैलीफोन किया था, आपको नहीं।"

❀ ❀ ❀

एक योरोपियन ऑफिसर एक डिनर-पार्टी में बड़ी शान से कह रहा था—

"हम लोग आत्म-सम्मान की रक्षा के लिये लड़ते हैं, और अंग्रेज पैसों की खातिर।"

ब्रिटिश ऑफिसर—"ठीक है, यार। जिसके पास जो चीज नहीं होती वह उसी के लिये लड़ता है।"

❀ ❀ ❀

डिक्टेटर स्टेट उसको कहते हैं जहाँ जो बात जरूरी नहीं है उसकी मुमानिअत हो।

❀ ❀ ❀

एक शराबी थाने में जल्दी से घुसा। उसके माथे से पसीना टपक रहा था।

"दौड़ो," वह खूब जोर से चिल्लाया। "दौड़ो।"

एक सार्जेन्ट ने चौंककर पूछा--"क्या हुआ?"

शराबी बोला—"एक जगह डाका पड़ रहा है।"

सार्जेन्ट कुर्सी पर से उछल पड़ा—"कहाँ? कहाँ डाका पड़रहा है?"

शराबी ने सिर हिलाकर कहा—"यह मुझे क्या मालूम लेकिन हिसाब लगाने से मालूम हुआ है कि इस देश में हर दो मिनिट पर एक डाका पड़ रहा है।"

❀ ❀ ❀

दो इटालिअनों की मिलान के एक बाजार में भेंट हो गई।

"व्यापार की क्या दशा है?" एक ने पूछा।

"बहुत अच्छी है," दूसरे ने उत्तर दिया।

"बहुत अच्छी है! इसके क्या माने?", पहले व्यक्ति ने आश्चर्य चकित हो पूछा।

"हाँ, हाँ, जो अगले साल दशा होगी उससे तो लाख दर्जे अच्छी है," दूसरे व्यक्ति ने समझाते हुए कहा।

❀ ❀ ❀

ग्राहक—" इस मेज़ पर कौन वेट कर रहा है?"

बेटर—"जब तक आपकी बारी नहीं आती, तब तक आप।"

❀ ❀ ❀

"मालूम नहीं तुमको क्या बीमारी है", डाक्टर ने कहा—"हो सकता है तुम्हारी बीमारी का कारण शराब हो।"

बीमार बोला—"अच्छा, डाक्टर साहब, मैं फिर आऊँगा जब आप पूरे होश-हवास में होंगे।"

❀ ❀ ❀

पुलिसमैन—ज्योंही मैंने तुम्हें मोड़ पर देखा मैंने समझ लिया कि कम से कम ४५ तो है ही।"

महिला जो मोटर ड्राइव कर रही थी—"तुम्हारी यह मजाल! अरे इस हैट की वजह से मेरी इतनी अधिक उम्र जँचती है।"

❀ ❀ ❀

एक स्कॉट और उसकी पत्नी एक रैस्टारॉं के सामने खड़े हुए एक कार्ड को पढ़ रहे थे जिस पर लिखा था—'लंचन (भोजन) १२ से २ बजे तक, १ शि० ६ पैं० में।"

पति पत्नी से बोला—"यहीं लंच करेंगे। १॥ शि० में २ घंटे तक लगातार खाना तो मिलेगा।"

❀ ❀ ❀

रामेश्वर अपने पड़ोसी गुप्ता को अपनी हाल ही में ख़रीदी हुई सैकण्ड-हैन्ड कार दिखा रहा था।

गुप्ता बोला—"यार, कार तो अच्छी है। मगर मैं सोच रहा था कि पेट्रोल काफी ख़र्च होता होगा।"

"नहीं यार," रामेश्वर बोला, "कुछ ख़र्च नहीं है। पहाड़ी पर घर है, शहर है नीचे। कोई ख़र्च नहीं। और लौटते वक़्त किसी की गाड़ी में पीछे से जोत दिया। मज़े में पहुँच जाता हूँ। कहो, कैसी तरकीब रही! हर्र लगे न फिटकिरी रंग चोखा ही आवे।"

❀ ❀ ❀

"तूने मुझे डूबने से बचा लिया," मैक्फ़र्सन बोला।" मैं तुझे ख़ुशी से एक शिलिंग दे देता। पर करूँ क्या, मेरे पास हैं २ शिलिंग। भुनाऊँ तो कहाँ भुनाऊँ?"

"कोई चिन्ता न करो," तैराक बोला, "एक बार फिर डुबकी लगाओ।"

❀ ❀ ❀

पूर्णिमा की रात्रि थी। रतीन्द्र बसु जिसकी अवस्था इस समय लगभग २२ के होगी, अपने पिता के पास पहुँचा।

रतीन्द्र के पिता लगभग ५५ वर्ष के होंगे, बैठे हुये सिगरेट पी रहे थे।

"मैं रतिकला से विवाह करना चाहता हूँ।" रतीन्द्र बोला।

पिता छत की ओर देखते हुए बोला—"बेटे, तुम्हें सुनकर दुःख होगा। पर रतिकला से तुम्हारा विवाह असम्भव है।

"क्यों ?"

"कारण यह है, रतीन्द्र, कि जब मैं नवयुवक था मुझसे अनेक गलतियाँ हुई थीं। मुझे कहते हुए लज्जा आती है, पर दर-असल में रतिकला से तुम्हारा विवाह नहीं हो सकता, क्योंकि वह तुम्हारी बहिन है।' निराशा से पूर्ण हृदय लेकर रतीन्द्र अपनी मा के निकट पहुँचा और सारी हृदय व्यथा कह सुनाई। जब वह सब कथा सुन चुकी, बोली—"तेरा विवाह रतिकला से अवश्य होगा। जाओ अपने पिता से कह आओ कि आप मेरे पिता ही नहीं हैं।"

❀ ❀ ❀

रात्रि का समय था। घना कोहरा छाया हुआ था। एक स्कॉच पादरी चलते-चलते गहरे गड्ढे में गिर पड़ा।

सहायता के लिये उसने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू किया।

चिल्लाहट सुनकर एक मोटा ताजा मजदूर आ पहुँचा।

"कौन हो तुम ?," मजदूर ने पूछा।

"मैं पादरी हूँ। मुझे यहाँ से जल्दी से निकालो।"

"तुम पादरी हो। अच्छा, अच्छा, इतना हल्ला करने की जरूरत नहीं है। आज बुधवार है और इतवार से पहले तुम्हारी गिरजा-घर में जरूरत नहीं पड़ेगी।"

❀ ❀ ❀

एक रोज़ रात्रि के समय एक हाईलैण्डर एक शराबख़ाने में पहुँच गया और बड़े ज़ोर से चिल्लाकर आज्ञा दी—"जब सैण्डी (नाम) पीता है, सब पीते हैं।"

जो भी शराबख़ाने में उपस्थित थे पीने के लिये आन डटे। सबके गिलास शराब से सवालब भर दिये गये। जब सैण्डी पी चुका, उचित मूल्य अपनी शराव का देते हुए बोला—"और जब सैण्डी अपने हिस्से की शराब का मूल्य देता है, तो सब देते हैं।" और तुरन्त ही कहकर वह चल दिया।

❀ ❀ ❀

एक स्कॉच ने एक लॉटरी के दो टिकिट ख़रीदे। इनाम में थी एक २०,००० पौण्ड की कार। सौभाग्य से वह कार स्कॉच को मिल गई। जब समाचार मित्रों को मिला वे सब वधाई देने के लिये दौड़ पड़े। पर स्कॉच का असन्तोषपूर्ण मुख देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ।

'क्यों, मित्र, मुँह कैसे लटका हुआ है ? क्या कारण है ?" उन्होंने पूछा। कार के नये मालिक ने उत्तर दिया—"दु:ख मुझे उस दूसरे टिकिट का है। मेरी समझ में नहीं आता कि आख़िर मैंने उसे क्यों ख़रीदा था।"

❀ ❀ ❀

पिता-पुत्र से बोला—"यह लो सेव। दोनो भाई-बहिन बाँट लो। देखो, अपनी वहिन को आदर के साथ खिलाना।"

"आदर के साथ कैसे, पिताजी ?"

"इसका अर्थ है कि सदैव बड़ा हिस्सा दूसरे को देना चाहिये और स्वयं छोटा हिस्सा लेना चाहिये।"

पुत्र ने थोड़ी देर मन में विचार किया फिर बोला—'लो वहिन, यह लो सेव, तुम्हीं मुझे इसमें से दे दो।"

❀ ❀ ❀

पँच कौड़ी मुकर्जी लखनऊ के बंगाली क्लब में दार्शनिक समझा जाता था। मौक़े बेमौक़े वह कह दिया करता था—"अरे, यह कुछ नहीं हुआ। इससे भी अधिक बुरा नतीजा हो सकता था।"

एक दिन एक आदमी क्लब में घबराता हुआ आया और बोला कि ए० पी० सेन रोड का एक डाक्टर जब एक मरीज़ देखकर घर लौटा उसने एक पड़ोसी को, अपनी बीवी से प्रेमालाप करते देख लिया और क्रोध में आकर पड़ोसी को गोली मार दी।

यह सुनकर सब कोई सन्नाटे में आ गये। पँच कौड़ी महोदय शान्ति को भंग करते हुए बोले—"अरे यह कुछ नहीं हुआ। इससे भी अधिक बुरा नतीजा हो सकता था।"

"अरे, इससे भी और क्या बुरा होता ?' एक बोला। बिचारे के प्राण तो हर लिये।"

"मैं कहता हूँ, "इससे भी अधिक बुरा नतीजा हो सकता था।" पँच कौड़ी ने कहा, "यदि डाक्टर उसी समय कत्ल घर पर पहुँचता उसने मुझे गोली से मार दिया होता।"

❀ ❀ ❀

एक आइरिश से, चाहे वह कैसा भी गया बीता क्यों न हो, बातों में जीतना आसान नहीं। एक आइरिश जो कि फटे चीथड़े पहने हुआ था, मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। और उस पर यह अपराध लगाया गया कि वह अवारा है और जिन्दगी बसर करने का इसके पास कोई जरिया नहीं। भिखारी ने अपने फटे कोट की जेब से एक सूखी मछली का टुकड़ा, एक रोटी का टुकड़ा और अनेक उबले हुए आलू निकालकर मेज पर रख दिये और बोला—"आप हुजूर, इन सब चीजों को देख रहे हैं। आपकी राय में क्या इनके अलावा और कुछ खाकर कोई अपनी जिन्दगी बसर कर सकता है ?"

❀ ❀ ❀

एक अमरीकन फिल्म अभिनेत्री ने पासपोर्ट के लिये अर्जी दे रक्खी थी।

"अविवाहित ?" उससे प्रश्न किया गया।

"हॉ, कभी-कभी।" उसने उत्तर दिया।

❀ ❀ ❀

हाजिर जवाबी मे आईरिश बैरिस्टर करैन का नाम बहुत प्रसिद्धि पा चुका है। पर एक बार अपने जीवन मे करैन को एक सईस के हाथो मुँह की खानी पडी। एक मुक़दमे में उस सईस की गवाही थी और उसकी गवाही पर मुकदमे की हार जीत निर्भर थी। करैन ने सोचा कि यदि सईस की गवाही बिगाड दी जाय, तो शायद मुक़दमा उसका मुवक्किल जीत जाय। करैन ने उसको बहुत डॉटा-फटकारा और कहा—"तुम बहुत बदमाश हो। तुममे सचाई का तो कोसों नामों भी नहीं है। तुम सूरत से बदमाश दिखाई पड़ते हो।"

सईस बहुत भोली सूरत बनाकर नम्रता-पूर्वक बोला—हुजूर, मेरी सूरत वाकई मे बहुत साफ शफाफ होगी, तभी तो उसमे बैरिस्टर साहब को अपनी शक्ल दिखाई पड़ रही है।"

करैन को बड़ा करारा जवाब मिला और वह मुक़दमा हार गया।

❀ ❀ ❀

नवाब साहब ने मन्त्रियों को बुला भेजा और एक नई जेल बनवाने की तजवीज पेश की गई। खज़ाने मे रुपया बहुत कम था। खैर, बहुत कुछ बहस हो चुकने पर, और शराब कबाब पीने खाने के बाद यह प्रस्ताव सबकी राय से पास हुआ—"हमको मन्जूर है कि नई जेल बनवाई जाय। पुरानी जेल को तोडकर जो मसाला मिले, उससे ही नई जेल की इमारत बनाई जाय, और जब तक नई जेल बने तब तक पुरानी जेल से ही काम चलाया जाय।"

❀ ❀ ❀

दो मित्रों में बहस छिड़ी हुई थी कि सूर्य्य और चाँद में कौन अधिक लाभदायक है।

एक बोला—"इसमें तो कोई शक ही नहीं कि सूर्य का प्रकाश अधिक तेज होता है।"

दूसरे ने उत्तर दिया—"लेकिन चन्द्रमा अधिक समझदार है।"

"वह कैसे ?'

'क्या इतना भी नहीं समझ सकते।"

"ऐसे अक्लमन्द हो, तो समझाओ न।"

"अरे यार, चन्द्रमा रात को चमकता है जब हमे उसकी जरूरत पड़ती है, और सूरज दिन को चमकता है जब कि एक काना भी उसके बिना भली भाँति देख सकता है।

❀ ❀ ❀

उत्तरी ध्रुव प्रदेश में बातें हो रही थीं। एक बोला—"जहाँ मैं था वहाँ इतनी ठंड पडती थी कि मोमबत्ती तक जम जाती थी, और लाख बुझाने की कोशिश करता था पर सब व्यर्थ।"

दूसरा बोला—"यह कुछ नहीं। जहाँ हम थे वहाँ हमारे मुँह से शब्द बर्फ के टुकड़े बनकर निकलते थे और जब उन्हें हम गर्म करके देखते थे तब मालूम होता था कि हम क्या बातचीत कर रहे हैं।"

❀ ❀ ❀

एक ने दूसरे से पूछा—"क्या श्रीमान आइरिश हैं ?"

"हाँ, मेरी धमनियों में आईरिश खून बहता है; परन्तु मैं स्कॉच भी हूँ, अँगरेज भी हूँ और कुछ २ इटालियन भी हूँ।"

"मालूम होता है, यार, तुम्हारी माताजी काफ़ी दूर देशों की हवा खा चुकी हैं।"

❀ ❀ ❀

एक अधेड़ रईस एक वैद्य के पास पहुँचा और बोला—"क्या तुम मुझे २५ वर्ष के जैसा युवक फिर बना सकते हो ?"

"अवश्य, पर एक सहस्र अशर्फियाँ लूँगा ।" वैद्य ने उत्तर में कहा ।

"क्या १८ वर्ष का कर सकते हो ?"

"हाँ, हाँ, पर उसके लिये ५०० अशर्फियाँ लूँगा ।"

"तब फिर १८ वर्ष का बना दो ।"

छः महीने बाद वैद्य ने फीस का तक़ाज़ा किया ।

रोगी बोला—"घास चर आये हो । अभी नाबालिग हूँ, और अगर नहीं हूँ, तो धोखा देने का मुकदमा दायर कर दूँगा ।"

❀ ❀ ❀

एक विधवा की परीक्षा करके डाक्टर मुस्कराया—'आपको कोई रोग तो है नहीं, श्रीमतीजी । आप अकेली ही रहती हैं, इसी से आपका स्वास्थ्य कुछ गिरा हुआ है । क्या आपने कभी फिर विवाहित होने की इच्छा की है ?"

वह बोली—"अरे डाक्टर साहब ! क्या आप मुझसे विवाह का प्रस्ताव तो नहीं कर रहे हैं ?"

डाक्टर ने उत्तर दिया—"डाक्टर का काम नुस्खा लिखने का है । न कि उसे सेवन करने का ।"

❀ ❀ ❀

"तुम्हें उस अँग्रेज नाविक की कहानी मालूम है जिससे एक विदेशी नाविक ने पूछा था कि अँग्रेज समुद्री युद्ध में सदैव क्यों जीत जाते हैं ?"

नाविक बोला—"इसका उत्तर तो बहुत आसान है । हम युद्ध प्रारम्भ करने से पूर्व भगवान से प्रार्थना करते हैं ।"

विदेशी नाविक बोला—"प्रार्थना तो हम भी करते हैं ।"

"सो तो ठीक है," अँग्रेज नाविक बोला—"किन्तु हम अँग्रेजी में प्रार्थना करते हैं।"

❀ ❀ ❀

झगड़े में एक आईरिश की आँख कुच गई। इस पर उसने कचहरी में मुक़दमा दायर कर दिया।

मजिस्ट्रेट ने कहा—"क्या तुम सचमुच यह समझते हो कि उसने तुम्हारी आँखे बाहर निकालने का इरादा किया था ?"

"नहीं, ऐसा तो मैं नहीं समझता।" आईरिश मैन ने उत्तर दिया, "पर मैं इतना मानता हूँ कि उसने मेरी आँखे अन्दर घुसेड़ने की कोशिश जरूर की थी।"

❀ ❀ ❀

वकील—"आप इन महाशय से पहले पहल कब मिलने गई थीं ?"

महिला गवाह—"कभी नहीं। यह महाशय हमेशा पहले मुझसे मिलने आते हैं। आप मालिक मकान है।"

❀ ❀ ❀

वकील—"क्या तुमने इस महिला से कुछ कहा-सुना था ?"

मुदायलै—"मै कैसे कुछ कह सुन सकता था ? उस समय मेरे हाथ में दो दर्जन अन्डे जो थे।"

❀ ❀ ❀

मजिस्ट्रेट—"क्या तुम बता सकते हो कि तुमने अपनी पत्नी को क्यों छोड़ दिया ?"

पति—"मैं ग़लत रास्ते पर चला गया होऊँगा।"

❀ ❀ ❀

मुहर्रिर—"क्या तुमने दुर्घटना को ख़तरनाक समझा था ?"

पुरुष—"जब तक मै बेहोश रहा तब तक तो नही।"

❀ ❀ ❀

एक अधेड़ पुरुष अपने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में डाक्टर साहब से सलाह लेने के लिये आया।

परीक्षा करके डाक्टर साहब बोले—"ईमानदारी की बात तो यह है कि आप यदि शराब पीना बन्द नहीं करेंगे, तो आपके मुख पर धब्बे पड़ जायँगे।"

रोगी ने डाक्टर की सलाह न मानी और असन्तोष प्रकट करता हुआ वहाँ से चल दिया।

महीने भर बाद वह डाक्टर के पास फिर आया। उसके मुख पर धब्बे पड गये थे।

डाक्टर की भविष्यवाणी की सराहना करते हुए वह बोला—"डाक्टर, आपकी बात बिल्कुल ठीक निकली। कुछ डार्बी (घुडदौड) के बारे मे भी बता दीजिये ?"

❀ ❀ ❀

एक घोड़ों के मेले मे सभी तरह के घोड़े बिक्री के लिये आये हुए थे। नीलाम करनेवाला काम शुरू करने के लिये खड़ा हो गया। एक बूढ़ा किसान एक तीन टॉग के घोड़े को लिये हुए आ पहुँचा।

"कितना होगा ?"

"१५ पौण्ड।"

नीलाम करनेवाला बोला—"मैं घोड़े का मूल्य जानना चाहता हूँ, वज़न नहीं।"

❀ ❀ ❀

मजिस्ट्रेट—अपने बचाव के लिये क्या तुमने कोई वकील किया है ?

प्रतिवादी—हूजूर, वकील की मुझे जरूरत नहीं। हाँ, दो अच्छे गवाह अलबत्ता चाहियें।

❀ ❀ ❀

मजिस्ट्रेट—तुमने अपनी पत्नी को क्यों छोड़ दिया ?

क़ैदी—हूजूर, यदि आप मेरी पत्नी को जानते होते, तो मुझे रिफ्यूजी (शरण में जान बचाकर आया हुआ) समझते।

❀ ❀ ❀

वकील—जो आदमी मर गया है क्या उसे कभी रुपये-पैसे की चिन्ता रही थी ?

गवाह—कभी कोई चिन्ता नहीं थी। उसके पास रुपया-पैसा था ही नहीं।

❀ ❀ ❀

"मेरी इच्छा है कि आप मेरे पति की इस फोटो से एक बड़ा फोटो तैयार कर दें। पर मैं उसमे हैट नहीं चाहती।" महिला ने फोटोग्राफर से कहा। फोटोग्राफर कुछ देर तक फोटो का अध्ययन करता रहा।

"हाँ, बन जायगी। मैं बाल भी ठीक कर दूँगा। पर यह बता दीजिये माँग किधर से कढ़ेगी ?" फोटोग्राफर ने पूछा।

महिला ताज्जुब प्रकट करती हुई बोली—"मुझे तो याद नहीं, लेकिन जब टोप उतर जायगा तब ख़ुद ही देख लेना।"

❀ ❀ ❀

एक युवती अध्यापिका अपनी शिष्याओं और शिष्यों को वसन्त-आगमन का वर्णन सुना रही थी।

"आज सवेरे जब मैं स्टेशन के प्लैटफार्म पर टहल रही थी और ट्रेन के आने की प्रतीक्षा कर रही थी, मुझे ऐसा लगा कि कोई चीज मेरे कपोलों को छू रही है। क्या तुम में से कोई बता सकता है कि वह क्या चीज हो सकती थी ?" उसने पूछा।

दर्जे का एक छोटा ढीठ लड़का बोला—"स्टेशन मास्टर की मूँछे।"

❀ ❀ ❀

एक नवयुवती पौं-पौं करनेवाले कुत्ते को लेकर सीधी होटल के भोजनालय में जा पहुँची। थोडी देर तक तो एक आदमी जो निकट की टेबिल पर बैठा था, सहन करता रहा। जब उससे अधिक सहा न गया वह युवती को सम्बोधन कर विनय की मूर्ति बन बोला—"श्रीमतीजी, क्या यह आपका पहला कुत्ता है?"

❀ ❀ ❀

सुधारक व्याख्यान दे रहा था—"अब समय आ गया है कि हमारा धर्म के प्रति अनुराग हो। हम अपने कर्त्तव्य को पहचाने। हमको चाहिये कि हम अपनी पूर्ण शक्ति के साथ उठ खडे हो। हम अपनी कमर कस ले। हम अपने कोटों को उतार फेंके। अपनी आस्तीनों को चढा ले, अपनी · "

"ठहरो-ठहरो," एक दुबली पतली महिला बोल उठी, "यदि हमको केवल कर्त्तव्य सिखाना है तो खबरदार कोई और कपडा उतार फेकने का साहस किया तो ।"

❀ ❀ ❀

वकील एक किसान से बहस कर रहा था।

"मेरा एक सीधा सा प्रश्न है। उसका ठीक-ठीक जवाब दोगे?" वकील ने पूछा।

"बताइये क्या प्रश्न है?"

"तुम मजिस्ट्रेट साहब से यह कहो—यदि १५ आदमी एक खेत को ५ घटे में जोत सकते हैं, तो ३० आदमी उसी खेत को कितनी देर मे जोत डालेगे?"

"यह इसका उत्तर नहीं दे सकते," किसान बोला।

"क्यों?"

"क्योंकि १५ आदमी उसको कभी का जोत भी चुके।"

❀ ❀ ❀

एक नवयुवक ने एक वृद्ध से पूछा—"आपने विवाह क्यों नहीं किया ?"

उसने उत्तर दिया—"कारण यह है कि जब मैं नवयुवक था मैंने प्रण किया था कि मन की सी लकड़ी मिलेगी तभी विवाह करूँगा। बहुत वर्षों बाद एक लड़की मिली।"

"बड़े भाग्यशाली रहे! फिर ?"

"पर वह अपने मन का सा आदमी ढूँढ़ रही थी," दुखी होकर वृद्ध ने कहा।

❀ ❀ ❀

मिसेज़ ब्राउन ने पूछा—"सौ वर्ष कैसे जियें ? जो पुस्तक थी वह आपने कहाँ रख दी है ?"

मिस्टर ब्राउन ने उत्तर दिया—"क्या तुम समझती हो कि उसे मैं तुम्हारी मा के लिये इधर उधर पड़ी रहने देता ?"

❀ ❀ ❀

एक बहुत दुःखी व्यक्ति एक कैमिस्ट की दुकान में गया और बोला—"क्या तुम मुझे कोई ऐसी दवा दे सकते हो जिससे मैं अपना दुःख भूल जाऊँ ?"

कैमिस्ट ने कहा—"हाँ! अभी दवा बनाये देता हूँ।" उसने कुनैन, ऐप्सम सॉल्ट, अलसी का तेल आदि आदि अनेक कड़वी दवाओं का एक मिक्स्चर बनाकर दे दिया। एक हफ्ते तक उस आदमी के दिमाग में अपने मुँह के जायके को ठीक करने के अलावा और कोई भी ख्याल नहीं आया।

❀ ❀ ❀

"और क्या तुम मुझे गत सप्ताह की नाराजगी के लिये क्षमा करोगे ?"

"जरूर, डार्लिंग। हम दोनों के न बोलने से मैं १५ रुपये बचा सका।"

❀ ❀ ❀

एक राजा ने, यह जानने के लिये कि कितने आदमी अपनी बीवियों से डरते हैं, अपनी प्रजा को बुला भेजा। जब सब एकत्रित हुए, राजा ने कहा—"जो पुरुष अपनी बीवियों से डरते हों, एक क़तार बनाकर खड़े हो जाये।"

राजा को बड़ा आश्चर्य्य हुआ जब केवल एक बौना एक तरफ अकेला खड़ा दिखाई दिया। राजा ने उससे पूछा—"तुम बड़े वीर पुरुष हो। क्या वाक़ई मे तुम अपनी बीवी से नही डरते ?"

बौना बोला—"नहीं हुजूर, ऐसी बात नहीं है। जब मैं घर से चला, मेरी बीवी ने मुझ से हिदायत कर दी थी कि भीड़ भब्भड़ से अलग रहना।"

❀ ❀ ❀

एक महाशयजी पैदल चले जा रहे थे। एक मोटरवाले ने उन्हें अपनी ही दिशा मे जाते हुए देखकर मोटर में बिठा लिया। मार्ग मे ड्राइवर ने देखा कि उसकी अपनी घड़ी लापता है। उसने फौरन ही गाड़ी रोक दी और हथौड़ा हाथ मे लेकर बोला—"निकालो मेरी घड़ी।" यात्री ने चुपचाप घडी दे दी। घडी लेकर ड्राइवर ने ठोकर मारकर यात्री को गाड़ी से उतार दिया।

जब ड्राइवर घर पहुँचा, उसकी मिसेज़ उससे बोली—"आज बिना घडी के तुमने कैसे अपना काम निकाला होगा ? घड़ी तो तुम ड्रेसिंग टेबिल पर रक्खी छोड गये थे।"

❀ ❀ ❀

ग्राहक—(सन्दिग्ध दृष्टि से) मै देख रहा हूँ कि तुमने अच्छे-अच्छे टमाटर ऊपर लगा रक्खे है।

कुँजड़ा—जी हाँ मेमसाहब, ऐसा मैने इसलिये किया है ताकि आपको अच्छे टमाटर ढूँढने मे कष्ट न उठाना पडे।

❀ ❀ ❀

एक आदमी एक रैस्टॉरॉ में भीतर चला गया और दरवाजे को खुला ही छोड़ता गया।

एक भारीभर्कम, मोटा आदमी जोर से बोला—"दरवाजा बन्द करो! तुम खलिहान में पैदा हुए थे क्या?"

बिचारे नवागन्तुक ने दरवाजा बन्दकर दिया और एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया और लगा रोने। इस पर मोटा आदमी कुछ दु:खी हुआ और उसके पास जाकर बोला—"मुझे दु:ख है, पर मेरा इरादा आपका जी दु:खाने का नहीं था। मैं सिर्फ चाहता था कि आप दरवाजा बन्द कर दें।"

"मैं इसलिये नहीं रो रहा हूँ कि आपने मेरा जी दुखाया है। लेकिन दरअस्ल में बात यह है कि मैं खलिहान में ही पैदा हुआ हूँ और जब कभी किसी गधे को रेंकता हुआ सुनता हूँ, तो मुझे घर की याद आ जाती है।"

❀ ❀ ❀

एक स्कॉट किसी होटल में ठहरा हुआ था। एक रात को बहुत तड़के ही उसे जगा दिया गया।

आँखे मीचे हुए ही वह बोला—"क्या मामला है?" नौकर बोला—"जल्दी कीजिये। उठिये! हवाई हमला हो रहा है।"

"अच्छा, हवाई हमला हो रहा है?" स्काट बड़बड़ाया और बोला—

"देखो, इतना ध्यान रखना मैं तुम्हें इस पलङ्ग का किराया नहीं दूँगा।"

❀ ❀ ❀

"जेम्स! यह हमारा बच्चा नहीं है—तुमने न जाने किसकी प्रैम (बच्चों की गाड़ी) ले ली है!"

"देखती नहीं, हमारी से यह कहीं अच्छी प्रैम है।"

❀ ❀ ❀

बैरेक की गश्त लगाते हुए एक कर्नल ने अस्तबलों के बाहर खड़ी हुई रंगरूटों की एक लम्बी क़तार देखी। प्रत्येक के हाथ में एक-एक शक्कर की डली थी।

वह एक रंगरूट से बोला— "मुझे ख़ुशी है कि तुम इन जानवरों को इतना अधिक चाहते हो। मालूम पड़ता है कि जिस घोड़े को तुम शक्कर खिला रहे हो, सारी पल्टन उसको बहुत चाहती है ?"

रंगरूट ने उत्तर दिया—"क़तई नहीं। आपकी बात एकदम गलत है। यह वह घोड़ा है जिसने सार्जन्ट के लात मारी थी।"

❀ ❀ ❀

डगलस—मेरे डैडी पुलिसमैन हैं।

डेव—ख़ूब बलवान हैं ?

डगलस—जरूर हैं ! एक हाथ से मोटरों को रोक लेते हैं।

❀ ❀ ❀

एक भुलक्कड़ प्रोफेसर साहब रेल में यात्रा कर रहे थे और पढ़ने मे दत्तचित थे। इतने ही मे कन्डक्टर आ गया और उसने टिकिट माँगा। प्रोफेसर साहब ने टिकिट को बहुत खोजा पर वह न मिला, न मिला।

"कोई हर्ज नहीं," कन्डक्टर बोला—"जब मिल जाय कम्पनी के दफ्तर मे भिजवा दीजिएगा। टिकिट आपके पास होगा ज़रूर।"

"टिकिट तो मेरे पास जरूर है," प्रोफेसर बहुत ज़ोर देकर बोले—"पर यह तो बता दीजिए जनाब ! मै जा कहाँ रहा हूँ ?"

❀ ❀ ❀

जेलर—विजिट करने का समय दो से चार तक है।

नया कैदी—मजाक करना छोड़ो। तुम भला मुझे विजिट करने जाने दोगे !

❀ ❀ ❀

"ज्योंही मै नाच के लिये उठा मेरी ब्रेसें टूट गई।"

"ग़ज़ब हो गया। तब तुमने अपनी पतलून कैसे साध रक्खी ?"

"मैं नजदीक के रैस्टॉरॉ मे घुस गया और नौ कोर्स का डिनर खाता रहा।"

❀ ❀ ❀

"जब से तुम्हारे पड़ोसी चले गये हैं, क्या तुम्हें उनकी याद नहीं आती ?"

"न। बात यह है कि उन्होंने हमसे कभी कोई चीज उधार नहीं मॉगी। इसीलिये कभी हमारी उनसे मुलाकात ही नहीं हुई।"

❀ ❀ ❀

जज—आखिर किस बिना पर तुम सब कैदियों को छोड़ देना चाहते हो ?

फोरमैन—पागलपन की बिना पर, हुज़ूर।

जज—क्या तुम सब, बारहों के बारहों ?

❀ ❀ ❀

मुद्दायलेह जिसके ऊपर बिना लाइसैन्स के कुत्ता रखने का अभियोग चलाया जा रहा था, गवाही के दौरान में कुछ गड़बड़ करने की कोशिश कर रहा था।

मैजिस्ट्रेट ने उससे पूछा—"क्या तुम कुत्ते का लाइसैन्स बदलवाने से इनकार करते हो ? क्या ऐसी तुम्हारी मन्शा है ?"

"जी, हुज़ूर, लेकिन · "

"हम लेकिन-वेकिन कुछ सुनना नहीं चाहते। तुमको जुर्माना देना पड़ेगा। तुमको मालूम था कि लाइसैन्स का वक्त गुज़र गया है।"

"जी, और मेरा कुत्ता भी तो गुज़र गया है।"

❀ ❀ ❀

ऊपर की मंजिलवाला व्यक्ति—(क्रोध मे) "मेरा कहना है कि तुमने मुझको शॉव्र दे मारते हुए नहीं सुना ?"

नीचे की मंजिलवाला व्यक्ति—"इसकी चिन्ता मत करो, यार ! हम खुद ही बहुत काफी शोर कर रहे थे।"

❀ ❀ ❀

रात के वक्त चौकीदारी करने के लिये एक आदमी की जरूरत थी। मैनेजर प्रत्येक व्यक्ति को कोई न कोई ऐब्र या नुक्स बताकर बर्खास्त करता जा रहा था। तुम नाटे हो, तुम लम्बे हो, तुम्हारी निगाह कमज़ोर है, तुम दुबले बहुत हो, आदि आदि। एक आइरिश खडा-खड़ा सुन रहा था और उसने मन मे तय कर लिया कि देखे मुझमें कैसे कोई ऐब्र निकालता है।

मैनेजर पैट से—"तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहता है ?"

पैट—"देखिए, मुझे एक शिकायत रहती है।"

मैनेजर—"वह क्या ?"

पैट—"मुझे नींद ही नहीं आती।"

❀ ❀ ❀

एक महिला दूसरी से—चाहे, कुछ होता हो, मैंने सदैव इज्जत-दार बने रहने की कोशिश की है।

दूसरी—"ज़ाती तौर पर, मुझे कभी कोशिश नहीं करनी पड़ी।"

❀ ❀ ❀

कुछ रँगरूट निशाने-बाज़ी के लिये पहले-पहल ले जाये गये। उन्होंने २५० गज की दूरी से निशाना मारा, चूक गये। २०० गज की दूरी से मारा, फिर चूक गये। १०० गज की दूरी से मारा, फिर भी वार खाली गया। सार्जेन्ट ने हुक्म दिया—"बैयोनेट लगाओ और धावा बोल दो। तुम्हारे लिये यही आखिरी मौका है।"

❀ ❀ ❀

दोनों ब्लैक-आउट में टकरा गये। पुरुष ने बहुत-बहुत क्षमा-याचना की और युवती को उठाकर खड़ा कर दिया।

"मुझे सचमुच बहुत दुःख है। अँधेरे में मैं आपको देख न सका।"

"यह सब छोड़ो। कृपा करके यह बता दो कि गिरने से पहले मेरा मुँह किधर की तरफ था ?"

❀ ❀ ❀

डॉक्टर—अब अपनी श्रीमतीजी की चिन्ता छोडिये। जब वह अस्पताल से लौटकर आयेंगी, तुम्हें तब तक दूसरी धर्मपत्नी मिल जायगी।

पति—पर, डॉक्टर अगर उसे मालूम हो गया तो फिर ?

❀ ❀ ❀

एक किसान लन्दन देखने पहली ही बार आया हुआ था। चूँकि वह लन्दन से कोई ४० मील दूर ही रहता था, घर से खाना खाकर चला था। होटल पहुँचकर वह सीधा सोने चला गया। लिफ्ट में से निकलकर वह नौकर से बोला—"यहाँ खाने के कौन २ समय हैं ?"

नौकर ने बताया—"नाश्ता ६ से १२ तक; लञ्च १२ से ३ तक; तीसरे पहर की चाय ३ से ६ तक, डिनर ६ से ९ तक; और सपर ९ से बारह तक।"

किसान बोला—"अच्छा। यह तो सब ठीक है, पर लन्दन देखने के लिये तो थोड़ा ही वक्त रह जाता है।"

❀ ❀ ❀

अध्यापिका—"क्या कोई लडका या लड़की मौजज़े का उदाहरण दे सकता है ?"

छोटी कमला—"जी हाँ। मेरी मा का कहना है कि यदि आपने नये पादरी साहब से शादी नहीं की तो मौजजा ही मानना पडेगा।"

❀ ❀ ❀

पिता बग़ल में जाकट दबाये हुए जीने पर से झुककर नीचे आये, और पत्नी और पुत्र दोनों की ओर कड़ी दृष्टि से देखा। फिर क्रोध मे उबल पड़े—"इस लड़के ने मेरी जेब में से दाम निकाले हैं।"

पत्नी बोली—"ख़बरदार, जो लड़के का इस तरह नाम लिया। मैंने हो निकाले हों तो।"

पिता ने सिर हिलाकर कहा—"नहीं, प्रिये, तुमने नहीं लिये हैं। जेब मे कुछ दाम बाक़ी रह गये थे।"

❀ ❀ ❀

एक बूढा किसान मरण-शय्या पर पड़ा हुआ था और अपनी पत्नी को अन्तिम हिदायतें दे रहा था—

"देखो, मेरिआ, टामस्मिथ पर मेरे १० पौंड बाकी हैं। उससे तक़ाज़ा करके वसूल कर लेना।"

"देखा, बिचारे, अन्तिम समय तक कैसे होश हवास में हैं! पत्नी पड़ोसियों से जो मिलने के लिये इकट्ठे हुए थे बोली। 'और, सुनो मेरिआ," मरणासन्न किसान बोला, "और जोन्स को २० पौंड देना मत भूलना।"

"अरे, अरे देखो," पत्नी बोली, "फिर बहकी-बहकी बातें करने लग गये।"

❀ ❀ ❀

"तो फिर आप कैमिस्ट्री पढ़ते हैं?"

"जी नहीं, यह मेरी श्रीमतीजी की ड्रैसिङ्ग टेबिल है।"

❀ ❀ ❀

डॉक्टर—आज तो तुम बहुत सँभलकर खाँस रहे हो।

मरीज—यह तो कोई ख़ास बात नहीं। रात-भर अभ्यास भी तो किया है।"

❀ ❀ ❀

एक अफ़सर जिसकी दृष्टि कमज़ोर थी, किट इन्सपैक्शन कर रहा था। कोई एक झाड़ू पलङ्ग के सहारे रखकर छोड़ गया था।

"सार्जेन्ट!" अफ़सर क्रोध में उबल पड़ा।

"हुज़ूर?" सार्जेन्ट बोला।

"इस आदमी के फौरन बाल बनवाओ!"

❀ ❀ ❀

ग्राहक दुकान के भीतर झटपट घुस गया और एक टाई उठाकर उसके दाम पूछे।

दुकानदार ने बताया कि टाई के दाम १०॥ शिलिङ्ग होंगे।

१०॥ शि०! क्या लूट-मार मचा रक्खी है? इतने में तो एक जोड़ा जूता आ सकता है," ग्राहक उत्तेजित होकर बोला।

दुकानदार ने कहा—"यह मुझे भी मालूम है। लेकिन जब आप अपनी गर्दन में एक जोड़ा जूता पहनेंगे तो क्या आप पर लोग न हँसेंगे?"

❀ ❀ ❀

जर्मनी में एक महोदय गली के कोने तक पहुँचे, और अपनी बेल्ट को थोड़ा और कसने लगे। इतने ही में गैस्टापो का एक सदस्य वहाँ आ गया और बोला—

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

मैं जरा नाश्ता कर रहा था।"

❀ ❀ ❀

चोर बैठक खाने में चोरी करने में व्यस्त था कि किशोर ने उसे देख लिया। डंडा उठाकर किशोर बोला—"जो कुछ तुम्हारी जेब में है सब निकाल कर मेज़ पर रखो।"

चोर—यह बेइन्साफी होगी। आधा माल आपके पड़ोसी का है।

❀ ❀ ❀

एक भिखारी ने दरवाजे पर खटखटाया और खाना माँगा। एक भयानक महिला बोली—"खाना नहीं मिलेगा। भाग जाओ, नही तो अपने पति को बुलाती हूँ।"

"अरे, रे, रे," भिखारी बोला—"तुम्हारा पति घर पर है कहाँ जिसे तुम बुलाओगी?"

"तुम्हें कैसे मालूम कि वह घर पर नही है?"

"क्योंकि जो तुम सी औरत से विवाह करेगा वह केवल भोजन के ही समय घर पर हाजिर होगा।"

❀ ❀ ❀

तड़के ही साइरन बोल उठी। होटल मे जितने भी मेहमान थे, सबके सब जिस हालत मे उस समय थे उसी मे शैल्टर मे जा पहुँचे—सिर्फ एक महाशय को छोड़कर।

पाँच मिनिट बाद वह महाशय भी वहाँ पहुँच गये।

"जल्दी की क्या जरूरत थी?" महाशयजी बोले, "मैं ड्रेस करने के लिये ठहरा रहा। पहले जो टाई बाँधी थी वह कुछ पसन्द नही आई। इसलिये दूसरी बाँधकर आगया।"

"बहुत खूब," एक सज्जन गम्भीरता पूर्वक बोले, "पर आपकी पतलून कहाँ रह गई?"

❀ ❀ ❀

एक महिला दूसरी से—क्या मैं ३० साल की लगती हूँ?

दूसरी—इस समय तो नही लग रही। पर हाँ, पहले लगा करती थी।

❀ ❀ ❀

पति—अब तुम इस बच्चे को कृपा करके गोदी मे लो। मैं इसे ज्यादा बेवकूफ नहीं बना सकता।

❀ ❀ ❀

मजिस्ट्रेट—"देखो इस वर्ष का यह पाँचवाँ व्यक्ति है, जिस पर तुमने अपनी मोटर चढ़ा दी ?"

महिला ड्राइवर ! "क्षमा कीजियेगा, चौथा व्यक्ति है, इनमें से एक व्यक्ति दो बार मोटर से दब गया था ।"

❀ ❀ ❀

म्यूज़ियम का चपरासी करोड़पति के पास गया और बोला—"यहाँ सिगार या सिग्रेट पीना मना है। पीने वाले पर १० शि० जुर्माना किया जाता है।

"अच्छी बात है यह लीजिए एक पौण्ड का नोट," अपराधी ने उत्तर दिया।

नौकर ने कहा—"पर मेरे पास चेञ्ज नहीं है।"

उस पर करोड़पति ने अपने सैक्रेटरी को एक सिगार पीने को दिया, "लो, जॉन, तुम भी पीओ।"

❀ ❀ ❀

पिता—"क्या तुम इम्तहान में पास हो गये ?"

टॉमी—"नहीं डैड, लेकिन जो फेल हो गये हैं उन सबके ऊपर मेरा नाम है।"

❀ ❀ ❀

पिता—यह कुर्सी किसने तोड़ी ?

पुत्री—अपने आप ही सहसा गिर पड़ी, हम दोनों में से गनीमत हुई, किसी के चोट नहीं आई।

❀ ❀ ❀

डैन्टिस्ट—तुम चिल्लाते क्यों हो ? मैंने तुम्हारा दाँत छुआ तक तो है नहीं।

मरीज़—नहीं, पर तुम मेरी छोटी उँगली पर जो खड़े हुए हो !

❀ ❀ ❀

बालक पादरीसाहब से—क्या प्रार्थना में आपका बहुत विश्वास है?

पादरी—अवश्य है।

बालक—आपकी राय में यदि मैं खूब प्रार्थना करूँ तो मुझे तुम्हारी जैसी सोने की घड़ी मिल सकती है?

पादरी—ज़रूर मिल सकती है यदि तुममें मेरा जैसा विश्वास हो।

बालक—तब फिर आप अपनी घड़ी मुझे दे दीजिये, और आप दूसरी के लिये प्रार्थना कर लीजिये।"

❀ ❀ ❀

छोटा बालक मार चिल्ल पों मचा रहा था कि पिताजी उसके पास आकर सो जाये।

पिता ने उससे कहा—"तुम इतने बडे हो गये और अब भी अकेले सोने मे डर लगता है। बड़े शर्म की बात है।"

बच्चे ने कहा—"आपको बाते बनाना खूब आता है। माता जी जो आपकी देख भाल रखती हैं। इसीलिये न?"

❀ ❀ ❀

युवती बोली—"प्रेम भी बड़ा विचित्र है। आज मैंने एक लेख पढ़ा उसमे लिखा था कि एक महाशय ४० वर्ष पार कर गये और निरक्षर भट्टाचार्य्य रहे। फिर उनका एक छोकरी से प्रम हो गया और दो वर्ष के भीतर ही वह प्रकाण्ड पडित बन गए।"

युवक पति बोला—"यह कुछ नहीं। मै एक ऐसे महाशयजी को जानता हूँ जो ४० वर्ष के होने पर बडे भारी महामहोपाध्याय थे। फिर उनका साक्षात्कार हो गया एक देवीजी से और उसकी खातिर दो दिन मे ही उन्होंने अपने आपको मूर्ख बना डाला।"

❀ ❀ ❀

एक महिला जिसने एक हिपनौटिस्ट से विवाह किया था, अपने पति को कचहरी में घसीट ले गई और जज से बोली—"हुजूर, मेरे पति के समान दुनिया भर में कोई दूसरा नीच नहीं मिलेगा। इसने मुझे कैनेरी पक्षी बना दिया और मुझे नाश्ते, डिनर और सपर के लिये चिड़ियों का दाना चुगने को दिया।"

जज दोषारोपण सुनकर दङ्ग रह गया। उसने अपराधी से पूछा—"क्या जो कुछ यह कहती है, ठीक है ?"

"मेरा व्यवहार नीचों जेसा हर्गिज़ नहीं रहा," पति ने उत्तर दिया।

जज ने आँखे फाड़कर देखते हुए कहा—"क्या तुम्हारी राय मे तुम्हारा व्यवहार नीचतापूर्ण नहीं रहा ?"

पति ने कहा—"हर्गिज़ नहीं। यदि मैंने इसे पक्षी बना दिया होता, तो इसे अपने दाने की तलाश में दर बदर फिरना पडता।"

❀ ❀ ❀

क्लास मैग्नेटिज्म का अध्ययन कर रही थी।

मास्टर साहब ने पूछा—"रॉबर्ट, मैग्नेट कितने प्रकार के होते हैं ?"

"दो प्रकार के," रॉबर्ट ने उत्तर दिया।

"उनके नाम तो बताओ।"

"ब्लॉन्ड् और ब्रूनैट्।"

❀ ❀ ❀

बूढ़ा सिपाही बोला—"मुझे वह समय याद है जब हमारा खाना, बारूद, शराब सब चुक गये थे और हमारे गले प्यास से सूख गये थे।"

श्रोताओं में से एक ने पूछा—"क्या तुम्हें पानी नहीं मिल सका ?"

"ज़रूर। पानी जरूर मिल सकता था" सिपाही ने उत्तर दिया, "पर सफाई की सोचने के लिए समय कहाँ था।"

❀ ❀ ❀

मा बच्चे से—"क्या हम उन दोनों जुड़वा भाइयों को कल चाय के लिये निमन्त्रण भेज दें ?"

बच्चा—"मा, एक ही को निमन्त्रण भेजो। दोनों एकदम एक सी शकल के तो हैं ही।"

❀ ❀ ❀

बड़ी गर्मी पड रही थी और सार्जन्ट ड्रिल सिखाते-सिखाते थक गा था।

माथे से पसीना पोंछते हुए वह बोला—"समझ में नहीं आता तुम्हें कैसे सिखाऊँ ?"

एक रॅगरूट बोला—"सार्जन्ट साहब, वहाँ पेड़ों की छाया में हम सबको ले चलो।"

"वहाँ पेड तो हैं, पर मेरे पास रस्सी जो नहीं है," सार्जन ने उत्तर दिया।

❀ ❀ ❀

दूल्हा और दुलहिन हनीमून मनाने के लिये मोटर में बैठकर दुलहिन के घर से कहीं दूर जाने वाले थे। जब दूल्हा चलने लगा, उसने एक खूँटी पर से हैट लिया और दूसरी पर से एक छाता और मोटर मे जा बैठा।

जब मोटर चलने लगी, दुलहिन का पिता झपटता हुआ मोटर के पास आया और जोर की आवाज मे बोला—"देखो तुम मेरा छाता कहाँ लिये जाते हो ? लाओ इधर उसे मुझे दो। छोकरियाँ तो मेरे पास पाँच-पाँच हैं, पर अच्छा छाता केवल एक ही है।"

❀ ❀ ❀

तुम्हारे दुश्मनों के बारे मे एक बात बहुत ही अच्छी है। वे तुम से रुपया उधार कभी नहीं माँगते।

❀ ❀ ❀

एक अमरीकन लन्दन की पहली बार सैर कर रहा था। ट्रैफालगार स्क्वायर में उसने एक मूर्ति देखी। उसने गाइड से पूछा—"यह किस की मूर्ति है?"

"नैल्सन की।"

"यह कौन था?"

बड़े गर्व के साथ अंग्रेज गाइड बोला—"यह वह नैल्सन जिसने इङ्गलैण्ड को इस मौजूदा हालत पर ला दिया।"

वह दुःखी होकर बोला—"किसी एक ही के सर पर सारा दोष मढ़ देना बहुत खराब बात है।"

❀ ❀ ❀

पादरी मिसेज हिगिन्स से—"आप सख्त गलती कर रही हैं कि अपने बच्चे को इतनी छोटी-सी उम्र से ही स्कूल से उठाये ले रही हैं। मैं तो ८ वर्ष की उम्र तक पढता रहा था।"

मिसेज हिगिन्स—"अच्छा! कुछ बालक जल्दी ही सीख लेते हैं, और कुछ ऐसे गधे होते हैं जो सीखने मे बहुत देर लगा देते हैं।"

❀ ❀ ❀

एक किसान ने एक फटे-मैले कपड़े पहने हुए व्यक्ति को अपने यहाँ नौकर रख लिया। वजह यह थी कि उसने इस बात का यक़ीन दिलाया था कि वह कभी थकता ही नहीं।

जब एक दिन मालिक खेत पर गया उसने देखा कि उसका नौकर बजाय काम करने के मजे में लेटा हुआ गीत गा रहा है।

मालिक ने कडक कर पूछा—"यह क्या कर रहे हो? मेरा ख्याल है तुमने मुझे यक़ीन दिलाया था कि तुम कभी थकते ही नहीं।"

नौकर शान्ति पूर्वक बोला—"बिलकुल ठीक यक़ीन दिलाया था। लेटे रहने से मैं हर्गिज़ कभी नहीं थकता।"

❀ ❀ ❀